क़ुरआन सबके लिए

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

विषय-सूची

क्या ?	कहाँ ?
● प्रस्तावना	4
● विषय-प्रवेश	5
● आह्वान (दावत)	6
● इस्लाम	8
● ईमान	9
● एकेश्वरवाद (तौहीद)	10
● ईशदूतत्व (रिसालत)	18
● मुहम्मद (सल्ल०)	20
● ईश्वरीय विधान (अल्लाह का कानून)	22
● परलोक (आख़िरत)	23
● भलाई-बुराई	26
● अल्लाह के आज्ञाकारी (मोमिन)	29
● सत्य का इनकार करनेवाले (काफ़िर)	31
● कपटाचारी (मुनाफ़िक़ीन)	33
● बहुदेववादी (मुशरिक)	35
● दौड़ो अल्लाह (प्रभु) की ओर	37
● अल्लाह-सर्वशक्तिमान और शासक है	38
● दीन के स्तम्भ	41
● अल्लाह की राह में जी तोड़ संघर्ष (जिहाद)	42
● हत्या-दण्ड (क़सास)	43
● युद्ध (जंग)	44
● विजय (फ़तह)	45
● डर (ख़ौफ़)	46
● मौत	47
● लापरवाही	48
● धोखा	49
● अल्लाह—सबका स्रष्टा और परम सत्य है	50
● अल्लाह—चरित्रवानों को पसन्द करता है	51
● सीमा का उल्लंघन न करो !	53
● आदेश	55
● इतिहास के पाठ	60
● विविध	62
● आत्म-शुद्धि	64

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त करुणामय और दयावान है।

प्रस्तावना

"क़ुरआन सबके लिए" वास्तव में क़ुरआन मजीद की चुनी हुई आयतों का एक संग्रह है। इस चुनाव में इसका ध्यान रखा गया है कि इसके द्वारा इस्लाम का सही परिचय हो सके और क़ुरआन की पवित्र शिक्षा लोगों के सामने आ सके, इसके साथ ही यह प्रकट हो सके कि क़ुरआन पर यह एतिराज़ कि उसकी शिक्षा अत्याचार और कठोरता पर आधारित है-बेबुनियाद है। क़ुरआन मानव को सोच और चरित्र की ऐसी ऊँचाई पर देखना चाहता है जिससे ऊँचे किसी स्थान की हम कल्पना भी नहीं कर सकते। क़ुरआन की शिक्षा में मस्तिष्क व मन के वास्तविक अधिकारों की जितनी रिआयत पाई जाती है, वह वास्तव में क़ुरआन का अपना चमत्कार है।

क़ुरआन वह प्रकाश है जिसकी उपस्थिति में किसी अंधकार और गुमराही का इमकान बाक़ी नहीं रहता। शर्त यह है कि इस प्रकाश से पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न किया जाए। आशा है कि इस संग्रह से ग़ैर मुस्लिम भाइयों की बहुत-सी वे अवधारणाएँ दूर हो सकेंगी जो दुर्भाग्य से क़ुरआन और इस्लाम से सम्बंधित उनके यहाँ पाई जाती हैं। इस संग्रह में आयतों का अनुवाद अनूदित क़ुरआन मजीद से लिया गया है।

ख़ुदा करे यह कोशिश क़बूल हो और इससे लोगों को वह लाभ पहुँच सके जिसके लिए यह संग्रह तैयार किया गया है।

भवदीय

मु० फ़ारूक़ ख़ाँ

विषय - प्रवेश

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ
الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۵ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त करुणामय और दयावान है।

प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो अखिल जगत का प्रभु है, अत्यन्त करुणामय और दया करनेवाला है, बदला दिए जाने के दिन का मालिक है।

हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।

हमें सीधा मार्ग दिखा; उन लोगों का मार्ग, जो तेरे कृपापात्र हुए, जो प्रकोप के भागी नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं।

आह्वान (दावत)

यह अल्लाह की किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं। मार्गदर्शन है, उन डरनेवालों के लिए जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं, (ऐ नबी !) जो किताब (अर्थात् क़ुरआन) तुम पर उतारी गई है और जो किताबें तुमसे पहले उतारी गईं थीं उन सबको मानते हैं और परलोक में विश्वास रखते हैं। ऐसे लोग अपने प्रभु की ओर से सीधे मार्ग पर हैं और वही पूर्णकाम हैं। —2 : 2-5

हमने यह किताब तुम पर इसलिए उतारी है कि तुम उन मतभेदों की वास्तविकता इनपर खोल दो जिनमें ये पड़े हुए हैं। —16 : 64

उस व्यक्ति की बात से अच्छी बात और किसकी होगी जिसने अल्लाह की ओर बुलाया और अनुकूल कर्म किया और कहा कि मैं (अल्लाह के) आज्ञापालकों में से हूँ। —41 : 33

अपने प्रभु के मार्ग की ओर बुलाओ तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ और उन लोगों से वाद-विवाद करो ऐसे ढंग से जो उत्तम हो। —16 : 125

तुममें कुछ लोग तो ऐसे अवश्य ही रहने चाहिएँ जो नेकी की ओर बुलाएँ, भलाई का आदेश दें और बुराइयों से रोकते रहें। —3 : 104

धर्म के विषय में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है। —2 : 256

कहो, "सत्य आ गया और अब असत्य के लिए कुछ नहीं हो सकता।" —34 : 49

हम तो असत्य पर सत्य की चोट लगाते हैं जो उसका सिर तोड़ देता है और वह देखते-देखते मिट जाता है। —21 : 18

हे नबी, बुराई को उस ढंग से दूर करो जो उत्तम हो। —23 : 96

तो सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट, कोई पूज्य-प्रभु उसके सिवा नहीं, स्वामी है महिमाशाली सिंहासन का। —23 : 116

और प्रार्थना करो कि "पालनहार, मैं शैतानों की उकसाहटों से तेरी शरण माँगता हूँ, बल्कि हे मेरे प्रभु, मैं तो इससे भी तेरी शरण माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।" —23 : 97-98

हे नबी, कहो, मेरे प्रभु, क्षमा कर और दया कर, तू सब दयावानों से अच्छा दयावान है। —23 : 118

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा प्रभु है और फिर वे इस पर जमे रहे,

निश्चय ही उनपर फ़रिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि "न डरो, न शोकाकुल हो, और प्रसन्न हो जाओ उस जन्नत की शुभ सूचना से जिसका तुमसे वादा किया गया है। हम इस सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे साथी हैं और परलोक में भी। वहाँ जो कुछ तुम चाहोगे तुम्हें मिलेगा और हर चीज़ जिसकी तुम कामना करोगे वह तुम्हारी होगी; यह है अतिथि-सत्कार की सामग्री उस सत्ता की ओर से, जो अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है।"

— 41 : 30-32

और हे नबी, भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम बुराई को उस नेकी से टालो जो उत्तम हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसका वैर पड़ा हुआ था वह आत्मीय मित्र बन गया है। यह गुण प्राप्त नहीं होता, किन्तु उन लोगों को जो धैर्य से काम लेते हैं। और यह पद प्राप्त नहीं होता किन्तु उन लोगों को जो बड़े भाग्यवान हैं। और यदि तुम शैतान की ओर से कोई उकसाहट महसूस करो तो अल्लाह की शरण माँग लो, वह सब कुछ सुनता और जानता है। —41 : 34-36

जो फ़रिश्ते तेरे प्रभु के निकटवर्ती हैं वे रात और दिन उसकी तसबीह कर रहे हैं और कभी नहीं थकते। —41 : 38

इस्लाम

अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है। —3 : 19

अब क्या ये लोग अल्लाह के आज्ञापालन की प्रणाली (ईश्वरीय धर्म) छोड़कर कोई और प्रणाली चाहते हैं? हालाँकि आकाशों और धरती की सारी चीज़ें स्वेच्छा से अथवा विवशतापूर्वक अल्लाह की आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं और उसी की ओर सबको पलटना है। (हे नबी) कहो कि "हम अल्लाह को मानते हैं, उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गई है, उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याकूब और याक़ूब की सन्तान पर उतरी थीं, और उन आदेशों को भी मानते हैं जो मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिए गए। हम उनके बीच अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।" इस आज्ञापालन (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई और प्रणाली अपनाना चाहे उसकी प्रणाली कदापि स्वीकार न की जाएगी और परलोक में वह असफल रहेगा। —3 : 83-85

और उनको इसके अतिरिक्त कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अल्लाह की बंदगी करें, अपने दीन (धर्म) को उसके लिए ख़ालिस करके बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें। यही अत्यन्त सही और दुरुस्त दीन (धर्म) है।

किताबवालों और मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने कुफ्र (इनकार) किया है वे निश्चय ही नरक की अग्नि में जाएँगे और सदैव उसमें रहेंगे, ये लोग सब प्राणी में अत्यन्त बुरे हैं। जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किए, वे निश्चय ही सब प्राणियों में अत्यन्त अच्छे हैं। उनका बदला उनके प्रभु के यहाँ शाश्वत निवास की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदा सर्वदा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए। यह कुछ है उस व्यक्ति के लिए जिसने प्रभु का भय खाया हो।

—98 : 5-8

अतः (हे नबी और नबी के अनुयायियो!) एकाग्र होकर अपना मुख इस धर्म की दिशा में जमा दो, क़ायम हो जाओ उस स्वभाव पर जिस पर अल्लाह ने मानवों को पैदा किया है, अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती, यही बिलकुल सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं। —30 : 30

ईमान

मनुष्य वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत करते और सब्र की मंत्रणा देते रहे। —103 : 2-3

नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर, बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अन्तिम दिन को और फ़रिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके संदेशवाहकों को दिल से माने, और अल्लाह के प्रेम में अपना मन भाता धन नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफ़िरों पर, सहायतार्थ हाथ फैलानेवालों पर और गुलामों की रिहाई पर ख़र्च करे, उपासना (नमाज़) का आयोजन करे और दान दे। और नेक वे लोग हैं कि वचन दें तो उसे पूरा करें, और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य और असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएँ। ये हैं सच्चे लोग और यही लोग सुचिन्तित हैं। —2 : 177

निश्चय ही सफलता पाई है ईमान लानेवालों ने जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाते हैं, व्यर्थ बातों से दूर रहते हैं, दान की नीति पर चलते हैं, (और) अपने गुप्त अंगों की रक्षा करते हैं, सिवाय अपनी पत्नियों के।

—23 : 1-6

हे नबी, शुभ सूचना दे दो विनम्रता की नीति अपनानेवालों को, जिनका हाल यह है कि अल्लाह की चर्चा सुनते हैं तो उनके हृदय काँप उठते हैं। जो मुसीबत भी उनपर आती है उस पर धैर्य से काम लेते हैं नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। —22 : 34-35

एकेश्वरवाद
(तौहीद)

निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है, वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ से अवगत है। —6 : 103

कहो, वह अल्लाह है, यकता। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है। और कोई उसका समकक्ष नहीं है। —112 : 1-4

अल्लाह, वह जीवन्त नित्य सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई प्रभु-पूज्य नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी का है। कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? जो कुछ लोगों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आकाशों और धरती पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देनेवाला कार्य नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।

—2 : 255

अल्लाह की तसबीह की है हर उस चीज़ ने जो धरती और आकाशों में है, और वही प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है। धरती और आकाशों के राज्य का मालिक वही है, जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। वही प्रथम भी है और अन्तिम भी है, और गोचर भी है और अगोचर भी, और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। वही है जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके ज्ञान में है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो। जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है। वही धरती और आकाशों के राज्य का मालिक है और सारे मामले फ़ैसले के लिए उसी की ओर रुजू किए जाते हैं। वही रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल करता है, और दिलों के छुपे हुए रहस्य तक जानता है।

—57 : 1-6

वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष हर चीज़ का जाननेवाला, वही अत्यन्त करुणामय और दयावान है। वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह सम्राट है अत्यन्त गुणवान, शान्ति स्वरूप, शरणदाता, संरक्षक, प्रभुत्त्वशाली, अपना आदेश बलपूर्वक लागू करनेवाला, और बड़ा ही होकर रहनेवाला।अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है वह 'शिर्क' (बहुदेववाद) जो ये लोग कर रहे हैं। वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना का बनानेवाला और उसको क्रियान्वित करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़, जो आकाशों और धरती में है, उसकी तसबीह कर रही है, और वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है। —59 : 22-24

हमने तुम्हें पैदा किया है, फिर क्यों सच नहीं मानते? कभी तुमने विचार किया, यह वीर्य जो तुम डालते हो, इससे बच्चा तुम बनाते हो या उसके बनानेवाले हम हैं? हमने तुम्हारे बीच मृत्यु को बाँटा है, और हमारे बस से यह बाहर नहीं है कि हम तुम्हारे रूप बदल दें और किसी ऐसे रूप में तुम्हें पैदा कर दें, जिसको तुम नहीं जानते। अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते ही हो, फिर क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

कभी तुमने सोचा, यह बीज जो तुम बोते हो, इनसे खेतियाँ तुम उगाते हो या उनके उगानेवाले हम हैं? हम चाहें तो इन खेतियों को भुस बनाकर रख दें और तुम तरह-तरह की बातें बनाते रह जाओ कि हम पर तो उलटा डाँड़ पड़ गया, बल्कि हमारे तो नसीब ही फूटे हुए हैं।

कभी तुमने आँखें खोलकर देखा, यह पानी जो तुम पीते हो, इसे तुमने बादल से बरसाया है या इसके बरसानेवाले हम हैं? हम चाहें तो इसे अत्यन्त खारी बनाकर रख दें, फिर क्यों तुम कृतज्ञता नहीं दिखाते?

कभी तुमने विचार किया, यह आग जो तुम सुलगाते हो, इसका वृक्ष तुमने पैदा किया है, या इसके पैदा करनेवाले हम हैं? हमने उसको अनुस्मारक और ज़रूरतमंदों के लिए जीवन-सामग्री बनाया है।

अत: अपने महान् प्रभु के नाम की तसबीह करो। —56 : 57-74

रात्रि के आवरण को फाड़कर वह प्रभात निकालता है। उसी ने रात को विश्राम का समय बनाया है। उसी ने चन्द्रमा और सूर्य के उदय और अस्त होने का हिसाब ठहराया है। ये सब उसी बलशाली सामर्थ्यवान और सर्वज्ञ के ठहराए हुए अंदाज़े हैं। और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारों को भूमि और समुद्र के अंधकारों में मार्ग मालूम करने का साधन बनाया। देखो, हमने

निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं। और वही है जिसने एक जीव से पैदा किया, फिर हर एक के लिए एक ठहरने का स्थल है और एक सौंपे जाने का स्थान। यह निशानियाँ हमने स्पष्ट कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो समझबूझ रखते हैं और वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया, फिर उसके द्वारा हर प्रकार की वनस्पति उगाई, फिर उससे हरे-भरे खेत और वृक्ष पैदा किए, फिर उनसे तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकाले और खजूर के गाभों से गुच्छे के गुच्छे पैदा किए जो बोझ के कारण झुके पड़ते हैं। और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जिनके फल एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और विशेषताएँ अलग-अलग भी हैं। ये वृक्ष जब फलते हैं तो इनमें फल आने और फिर उनके पकने की दशा को तनिक ध्यान-दृष्टि से देखो, इन चीज़ों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। इस पर भी लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया, हालाँकि वह उनका स्रष्टा है और बेजाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियाँ रच दीं, हालाँकि वह निर्लिप्त और उच्च है उन बातों से जो ये लोग कहते हैं। —6 : 96-100

अतः 'तसबीह' करो अल्लाह की जबकि तुम संध्या करते हो और जब सुबह करते हो। आकाशों और धरती में उसी के लिए प्रशंसा है। और (तसबीह करो उसकी) तीसरे पहर और जबकि तुम पर ज़ुहर का समय आता है। वह जीवित को मुर्दे में से निकालता है और मुर्दे को जीवित में से निकाल लाता है और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। इसी तरह तुम लोग भी (मृत्यु की दशा से) निकाल लिए जाओगे।

उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर सहसा तुम मानव हो कि (धरती में) फ़ैलते चले जा रहे हो।

और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी। निस्संदेह, इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की सृष्टि और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की भिन्नता है। निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं, बुद्धिमान लोगों के लिए।

और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन का सोना और तुम्हारा उसके अनुग्रह (आजीविका) को तलाश करना है। निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिए जो (ध्यानपूर्वक) सुनते हैं।

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है भय के साथ भी और लोभ के साथ भी। और आकाश से पानी बरसाता है, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। निस्संदेह, इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

और उसकी निशानियों में से यह है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं। फिर ज्यों ही कि उसने तुम्हें धरती से पुकारा, बस एक ही पुकार में सहसा तुम निकल आओगे। आकाशों और धरती में जो भी हैं उसके बन्दे हैं। सब के सब उसकी आज्ञा के अधीन हैं। वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा और यह उसके लिए अधिक सरल है। आकाशों और धरती में उसका गुण सर्वोच्च है और वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है। —30 : 17-27

हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया, फिर उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूँद के रूप मे परिवर्तित किया, फिर उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया, फिर लोथड़े को बोटी बना दिया, फिर बोटी की हड्डियाँ बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया, फिर उसे एक दूसरा ही सृजन बना खड़ा किया। अतः बड़ी बरकतवाला है अल्लाह, सब कारीगरों से अच्छा कारीगर। फिर इसके उपरान्त तुमको अवश्य मरना है, फिर पुनरुज्जीवन के दिन निश्चय ही तुम उठाए जाओगे।

और तुम्हारे ऊपर हमने सात मार्ग बनाए, सृष्टि-कार्य से हम कुछ अनभिज्ञ न थे। —23 : 12-17

यह हमारी कार्यकुशलता है कि आकाश में हमने बहुत से सुदृढ़ क़िले बनाए, उनको देखनेवालों के लिए (तारों से) सुसज्जित किया, और प्रत्येक फिटकारे हुए शैतान से उनको सुरक्षित कर दिया। कोई शैतान उनमें राह नहीं पा सकता, यह और बात है कि कुछ सुन-गुन ले ले। और जब वह सुन-गुन लेने की कोशिश करता है तो एक प्रदीप्त अग्निशिखा उसका पीछा करती है।

हमने धरती को फैलाया, उसमें पहाड़ जमाए, उसमें हर प्रकार की वनस्पति ठीक-ठीक नपे-तुले परिमाण के साथ उगाई और उसमें आजीविका के सामान जुटाए, तुम्हारे लिए भी और सृष्टि के उन बहुत-से प्राणियों के लिए भी जिनके दाता तुम नहीं हो। कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और जिस चीज़ को भी हम उतारते हैं एक निश्चित मात्रा में उतारते हैं। उर्वर हवाओं को हम ही भेजते हैं, फिर आकाश से पानी बरसाते हैं, और उस पानी से तुम्हें

सिंचित करते हैं। इस दौलत के कोषाधिकारी तुम नहीं हो। जीवन और मृत्यु हम देते हैं, और हम ही सबके उत्तराधिकारी होनेवाले हैं। पहले जो लोग तुम में से हो गुज़रे हैं उनको भी हमने देख रखा है, और तत्पश्चात् आनेवाले भी हमारी दृष्टि में हैं। निश्चय ही तुम्हारा प्रभु इन सबको इकट्ठा करेगा, वह तत्त्वदर्शी भी है और सर्वज्ञ भी।

हमने मानव को सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से बनाया। और उससे पहले जिन्नों को हम आग की लपट से पैदा कर चुके थे। —15 : 16-27

और क्या ये लोग अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को भी नहीं देखते कि उसकी छाया किस प्रकार अल्लाह के समक्ष सजदा करते हुए दाएँ और बाएँ गिरती है? सब के सब इस प्रकार विनम्रता एवं निम्नता दर्शा रहे हैं। धरती और आकाशों में जितने भी जीवधारी हैं और जितने फ़रिश्ते, सब अल्लाह के आगे सजदे में हैं। वे कदापि उद्दण्डता नहीं दिखाते अपने प्रभु से जो उनके ऊपर है, डरते हैं और जो कुछ आदेश दिया जाता है उसी के अनुसार कार्य करते हैं।

अल्लाह का आदेश है कि "दो प्रभु-पूज्य न बना लो, प्रभु तो बस एक ही है", अतः तुम मुझी से डरो। उसी का है वह सब जो आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, और विशुद्ध धर्म उसी का (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में) चल रहा है। फिर क्या अल्लाह को छोड़कर तुम किसी और का डर रखोगे?

—16 : 48-52

अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है। (ब्रह्माण्ड में) उसके प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताक़ (आला) में चिराग़ रखा हुआ हो, चिराग़ एक फ़ानूस में हो, फ़ानूस का हाल यह हो कि जैसे मोती की तरह चमकता हुआ तारा, और वह चिराग़ ज़ैतून के एक ऐसे बरकतवाले वृक्ष के तेल से प्रदीप्त किया जाता हो जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, जिसका तेल आप-ही-आप भड़का पड़ता हो चाहे आग उसको न लगे, (इस प्रकार) प्रकाश-पर-प्रकाश (बढ़ने के सभी साधन एकत्र हो गए हों)। अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसका चाहता है पथप्रदर्शन करता है, वह लोगों को उपमाओं से बात समझाता है, वह हर चीज़ से भली-भाँति परिचित है। (उसके प्रकाश की ओर पथप्रदर्शन पानेवाले) उन घरों में पाए जाते हैं जिन्हें ऊँचा करने का, और जिनमें अपने नाम की याद की अल्लाह ने अनुज्ञा दी है। उनमें ऐसे लोग प्रातःकाल और संध्या समय उसकी तसबीह करते हैं जिन्हें व्यापार और क्रय-विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात (दान) देने में ग़ाफ़िल नहीं करता। वे

उस दिन से डरते रहते हैं जिसमें दिल उलटने और आँखें पथरा जाने की नौबत आ जाएगी, (और वे यह सब कुछ इसलिए करते हैं) ताकि अल्लाह उनके अच्छे से अच्छे कर्मों का बदला उनको दे और उन्हें और अधिक अपने अनुग्रह से प्रदान करे, अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (इसके विपरीत) जिन्होंने इनकार किया उनके कर्मों की मिसाल ऐसी है जैसे चटियल मैदान में मरीचिका कि प्यासा उसको पानी समझे हुए था किन्तु जब वहाँ पहुँचा तो कुछ न पाया, बल्कि वहाँ उसने अल्लाह को विद्यमान पाया, जिसने उसका पूरा-पूरा हिसाब चुका दिया, और अल्लाह को हिसाब लेते देर नहीं लगती। या फिर उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक गहरे समुद्र में अंधकार के ऊपर एक मौज छाई हुई है, उस पर एक और मौज, और उसके ऊपर बादल, अंधकार पर अंधकार छाया हुआ है, आदमी अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देखने पाए। जिसे अल्लाह प्रकाश न प्रदान करे उसके लिए फिर कोई प्रकाश नहीं।

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह की तसबीह कर रहे हैं वे सब जो आकशों और धरती में हैं और वे पक्षी जो पंख फैलाए उड़ रहे हैं? हर एक अपनी नमाज़ और तसबीह का ढंग जानता है, और ये सब जो कुछ करते हैं अल्लाह उसे जानता होता है। आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है और उसी की ओर सबको पलटना है।

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह बादल को धीरे-धीरे चलाता है, फिर उसके टुकड़ों को परस्पर जोड़ता है, फिर उसे समेट कर एक स्थूल मेघ बना देता है, फिर तो तुम देखते हो कि उसके खोल में से वर्षा की बूँदें टपकी चली आती हैं। और वह आकाश से, उन पहाड़ों की बदौलत जो उसमें ऊँचे उठे हुए हैं, ओले बरसाता है, फिर जिसे चाहता है उनकी हानि पहुँचाता है और जिसे चाहता है उनसे बचा लेता है। उसकी बिजली की चमक निगाहों को चौंधियाई हुई किए देती है। रात और दिन का उलट फेर वही कर रहा है। इसमें एक शिक्षा है आँखवालों के लिए।

और अल्लाह ने हर जीव-धारी को एक प्रकार के पानी से पैदा किया। कोई पेट के बल चल रहा है, तो कोई दो टाँगों पर और कोई चार टाँगों पर। जो कुछ वह चाहता है पैदा करता है, उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

हमने स्पष्ट रूप से सत्य को बतानेवाली आयतें उतार दी हैं, आगे सीधे मार्ग की ओर पथप्रदर्शन अल्लाह ही जिसे चाहता है प्रदान करता है।

ये लोग कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया, किन्तु इसके पश्चात् इनमें से एक गिरोह

(आज्ञापालन से) मुँह मोड़ जाता है। —24 : 35-47

अत्यन्त करुणामय (अल्लाह) ने इस कुरआन की शिक्षा दी है। उसी ने मनुष्य को पैदा किया और उसे बोलना सिखाया।

सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब के पाबन्द हैं और तारे और वृक्ष सब सजदा करते हैं। आकाश को उसने ऊँचा किया और तुला स्थापित कर दी। इससे अपेक्षित यह है कि तुम तुला में विघ्न उत्पन्न न करो, न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तराज़ू में डण्डी न मारो।

धरती को उसने सब खिलक़त के लिए बनाया। उसमें हर प्रकार के बहुत से स्वादिष्ट फल हैं। खजूर के वृक्ष हैं जिनके फल वेष्टनों में लिपटे हुए हैं। तरह-तरह के अनाज हैं, जिनमें भूसा भी होता है और दाना भी। बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

मनुष्य को उसने ठीकरी जैसे सूखे सड़े गारे से बनाया और जिन्न को आग की लपट से पैदा किया। बताओ, तुम अपने प्रभु के किन-किन सामर्थ्य-चमत्कारों को झुठलाओगे?

दोनों पूर्व और दोनों पश्चिम, सबका प्रभु, सबका मालिक और पालनहार वही है. बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे?

दोनों समुद्रों को उसने छोड़ दिया कि परस्पर मिल जाएँ, फिर भी उनके बीच एक परदा बाधक है जिसे वे पार नहीं करते। बताओ, तुम अपने प्रभु की सामर्थ्य के किन-किन चमत्कारों को झुठलाओगे? इन समुद्रों से मोती और मूँगे निकलते हैं। बताओ, तुम अपने प्रभु के सामर्थ्य की किन-किन कुशलताओं को झुठलाओगे?

और ये जहाज़ उसी के हैं जो समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊँचे उठे हुए हैं। बताओ, तुम अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

हर चीज़ 'जो इस धरती में है' नाशवान है और केवल तेरे प्रभु का प्रतापवान एवं उदार स्वरूप ही शेष रहनेवाला है। बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन कुशलताओं को झुठलाओगे? धरती और आकाशों में जो भी हैं सब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की उसी से माँग कर रहे हैं। नित वह नई शान में है। बताओ, तुम अपने प्रभु के किन-किन प्रशस्त गुणों को झुठलाओगे?

हे धरती के बोझो, शीघ्र ही हम तुमसे पूछताछ के लिए निवृत्त हुए जाते हैं, (फिर देख लेंगे कि) तुम अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठलाते हो। हे

जिन्न और मनुष्य के गिरोह, यदि तुम धरती और आकाशों की सीमाओं से निकलकर भाग सकते हो तो भाग देखो। नहीं भाग सकते। इसके लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। अपने प्रभु के किन-किन सामर्थ्यों को तुम झुठलाओगे ? (भागने की कोशिश करोगे तो) तुम पर अग्नि-ज्वाला और धुआँ छोड़ दिया जाएगा। जिसका तुम मुक़ाबला न कर सकोगे। बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन सामर्थ्यों का इनकार करोगे ?

फिर (क्या बनेगी उस समय) जब आकाश फटेगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा ? बताओ, (उस समय) तुम अपने प्रभु की किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे ? —55 : 1-38

अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई ईश नहीं है और फ़रिश्ते और सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझवाले के सिवा वास्तव में कोई ईश नहीं है !

— 3 : 18

ईशदूतत्व (रिसालत)

निस्संदेह, नबी का सम्बन्ध तो ईमानवालों के साथ उससे अधिक है जितना उन लोगों का अपने आप से है। —33 : 6

हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि "अल्लाह की बंदगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी की बन्दगी से बचो।" —16 : 36

कोई समुदाय ऐसा नहीं हुआ है, जिसमें कोई चेतावनी देनेवाला न आया हो। —35 : 24

हे नबी, तुमको जो कुछ कहा जा रहा है उसमें कोई चीज़ भी ऐसी नहीं है जो तुमसे पहले गुज़रे हुए रसूलों को न कही जा चुकी हो। — 41 : 43

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इनकार की नीति अपनाते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और इनकार और ईमान के बीच में एक राह निकालना चाहते हैं, वे सब पक्के इनकारी हैं और ऐसे इनकारियों के लिए हमने वह यातना तैयार कर रखी है जो उन्हें अपमानित कर देनेवाली होगी—इसके विपरीत जो लोग अल्लाह और उसके सभी रसूलों को मानें, और उनके बीच अन्तर न करें, उनको हम अवश्य उनकी मज़दूरियाँ देंगे, और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करनेवाला है। —4 : 150-152

हमने उन रसूलों पर भी प्रकाशना भेजी जिनकी चर्चा हम इससे पहले तुमसे कर चुके हैं और उन रसूलों पर भी जिनकी चर्चा तुमसे नहीं की।

— 4 : 164

हे लोगो जो ईमान लाए हो, बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी हों!

—4 : 59

जिसने रसूल की आज्ञा मानी उसने वास्तव में अल्लाह की आज्ञा का पालन किया। — 4 : 80

वास्तव में तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। —33 : 21

फिर सोचो, उस समय (क़ियामत के दिन) ये (इनकारी) क्या करेंगे जब हम

हर समुदाय में से एक गवाह खड़ा करेंगे। उस समय वे सब लोग, जिन्होंने रसूल की बात न मानी और उसकी अवज्ञा करते रहे, कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि धरती फट जाए और वे उसमें समा जाएँ। —4 : 42

हमने जो भी रसूल भेजा है इसीलिए भेजा है कि अल्लाह की अनुमति से उसकी आज्ञा का पालन किया जाए। —4 : 64

जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे उसने बड़ी सफलता प्राप्त की। —33 : 71

हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि "अल्लाह की बन्दगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी की बन्दगी से बचो।" —16 : 36

मुहम्मद (सल्ल०)

वे (मुहम्मद) अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक हैं। —33 : 40

जो अल्लाह के संदेश पहुँचाते हैं और उसी से डरते हैं और एक अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। —33 : 39

हे नबी, हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार प्रकाशना भेजी है जिस प्रकार नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों की ओर भेजी थी। हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की संतान, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलेमान की ओर प्रकाशना भेजी। हमने दाऊद को ज़बूर दी। —4 : 163

और हे नबी, तुमसे पहले भी हमने मनुष्यों ही को रसूल बनाकर भेजा था जिन पर हम प्रकाशना किया करते थे। तुम लोगों को यदि ज्ञान नहीं तो किताबवालों से पूछ लो। उन रसूलों को हमने कोई ऐसा शरीर नहीं दिया था कि वे खाते न रहे हों, और न वे सदैव जीने वाले थे। फिर देख लो कि आख़िरकार हमने उनके साथ अपने वादे पूरे किए, और उन्हें और जिस-जिस को हमने चाहा बचा लिया और मर्यादाहीन लोगों को विनष्ट कर दिया।

—21 : 7-9

और हे नबी, तुमसे पहले हमने ऐसा न कोई रसूल भेजा है न नबी (जिसके साथ यह मामला न पेश आया हो) कि जब उसने कामना की, शैतान ने उसकी कामना में विघ्न डाला। इस प्रकार जो कुछ भी शैतान विघ्न डालता है, अल्लाह उसको मिटा देता है और अपनी आयतों को सुदृढ़ कर देता है, अल्लाह सर्वज्ञ है और है तत्त्वदर्शी। —22 : 52

हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा है, उसको यही प्रकाशना की है कि मेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं है, अतः तुम लोग मेरी ही बंदगी करो।

— 21 : 25

(हे नबी) कहो, प्रशंसा है अल्लाह के लिए और सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने चुन लिया। —27 : 59

हे नबी, कहो—हे लोगो, मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, जो धरती और आकाशों के राज्य का मालिक है, उसके सिवा कोई पूज्य (इलाह) नहीं है, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है। —7 : 158

हे नबी, लोगों से कह दो कि "यदि तुम वास्तव में अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारी ख़ताओं को

क्षमा कर देगा। वह बड़ा क्षमाशील और दयावान है।" — 3 : 31

हे नबी, हमने तो तुमको दुनियावालों के लिए दयालुता बनाकर भेजा है। — 21 : 107

मैंने तुम्हारे बीच स्वयं तुम में से एक संदेश-दूत भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हारे जीवन को संवारता है, तुम्हें किताब और समझ की शिक्षा देता है और तुम्हें वे बातें सिखाता है जो तुम जानते न थे। —2 : 151

ईश्वरीय विधान
(अल्लाह का क़ानून)

यह कि कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और यह कि मनुष्य के लिए कुछ नहीं है मगर वह जिसके लिए उसने प्रयास किया है, और यह कि उसका प्रयास जल्द ही देखा जाएगा फिर उसका पूरा बदला उसे दे दिया जाएगा। —53 : 38-41

सच यह है कि अल्लाह किसी जाति की दशा को नहीं बदलता जब तक कि वह स्वयं अपने गुणों को नहीं बदल देती। —13 : 11

हर मनुष्य का शकुन हमने उसके अपने गले में लटका रखा है, और पुनरुज्जीवन के दिन हम एक लेख उसके लिए निकालेंगे जिसे वह खुली किताब की तरह पाएगा— पढ़ अपना कर्मपत्र, आज अपना हिसाब लगाने के लिए तू स्वयं काफ़ी है।

जो कोई सीधा मार्ग अपनाए उसका सीधे मार्ग को अपनाना उसके अपने ही लिए लाभकारी है, और जो पथभ्रष्ट हो उसकी पथभ्रष्टता का वबाल उसी पर है। कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम यातना देनेवाले नहीं हैं जब तक कि (लोगों को सत्य और असत्य का अन्तर समझाने के लिए) एक संदेशवाहक न भेज दें। —17 : 13-15

जो कोई (इस संसार में) शीघ्र प्राप्त होनेवाले लाभों का इच्छुक हो, उसे यहीं हम दे देते हैं जो कुछ भी जिसे देना चाहें, फिर उसके भाग्य में नरक लिख देते हैं जिसे वह तापेगा तिरस्कृत और दयालुता से वंचित होकर। और जो परलोक का इच्छुक हो और उसके लिए प्रयास करे जैसा कि उसके लिए प्रयास करना चाहिए , और हो वह ईमानवाला, तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति के प्रयास की क़द्र की जाएगी। इनको भी और उनको भी, दोनों पक्षवालों को हम (संसार में) जीवन-सामग्री दिए जा रहे हैं, यह तेरे प्रभु का प्रदान है और तेरे प्रभु के प्रदान को रोकनेवाला कोई नहीं है, देख लो, पर हमने एक गिरोह को दूसरे के मुक़ाबले में कैसा आगे रखा है, और परलोक में उसके दर्जे और उसकी प्रतिष्ठा और भी अधिक होगी। —17 : 18-21

जिन लोगों ने अधर्म और इनकार की नीति अपनाई है उन्हें लोक और परलोक दोनों में कठोर दण्ड दूँगा और वे कोई सहायक न पाएँगे और जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म की नीति अपनाई है उन्हें उनकी मज़दूरियाँ पूरी-पूरी दे दी जाएँगी और (भली-भाँति जान लें कि) अत्याचारियों से अल्लाह कदापि प्रेम नहीं करता। —3 : 56-57

परलोक (आख़िरत)

इन लोगों को पलटना हमारी ओर ही है, फिर इनका हिसाब लेना हमारे ही ज़िम्मे है। —88 : 25-26

उस दिन लोग विभिन्न दशा में पलटेंगे, ताकि उनके कर्म उनको दिखाए जाएँ। फिर जिस किसी ने कण बराबर नेकी की होगी वह उसको देख लेगा। और जिसने कण बराबर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा। —99 : 6-8

तो जिसने उद्दण्डता दिखाई थी और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी थी, नरक ही उसका ठिकाना होगा। और जिसने अपने प्रभु के सामने खड़े होने का भय रखा था और जी को बुरी इच्छाओं से बाज़ रखा था, जन्नत उसका ठिकाना होगा। —79 : 37-41

वास्तव में तुम्हारे प्रभु की पकड़ बड़ी कड़ी है। वही पहली बार पैदा करता है और वही पुनः पैदा करेगा। और वह क्षमाशील है, प्रेम करनेवाला है, राज्य सिंहासन का स्वामी है, गौरववाला महान है, और जो कुछ चाहे कर डालनेवाला है। — 85 : 12-16

फिर उस दिन अल्लाह जो यातना देगा वैसी यातना देनेवाला कोई नहीं, और अल्लाह जैसा बाँधेगा वैसा बाँधनेवाला कोई नहीं।

(दूसरी ओर कहा जाएगा) हे शान्त एवं परितुष्ट आत्मा, चल अपने प्रभु की ओर, इस हाल में कि तू उससे ख़ुश, वह तुझसे ख़ुश है। सम्मिलित हो जा मेरे (नेक) बंदों में और प्रवेश कर मेरी जन्नत में। — 89 : 25-30

निस्संदेह, निर्णय का दिन एक नियत समय है। जिस दिन नरसिंहा में फूँक मार दी जाएगी, तुम दल के दल निकल आओगे। और आकाश खोल दिया जाएगा यहाँ तक कि वह द्वार ही द्वार बनकर रह जाएगा, और पहाड़ चलाए जाएँगे यहाँ तक कि वे मरीचिका हो जाएँगे।

वास्तव में नरक एक घात है, उद्दण्डों का ठिकाना, जिसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे। उसके भीतर किसी ठंडक और पीने योग्य किसी चीज़ का मज़ा वे न चखेंगे, कुछ मिलेगा तो गर्म पानी और घावों का धोवन (उनकी करतूतों का) भरपूर बदला। वे किसी हिसाब की आशा न रखते थे और हमारी आयतों को उन्होंने बिल्कुल झुठला दिया था, और हाल यह था कि हमने हर चीज़ गिन-गिन कर लिख रखी थी, अब चखो मज़ा। हम तुम्हारे लिए यातना के सिवा किसी चीज़ में कदापि अभिवृद्धि न करेंगे।

निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए सफलता का एक स्थान है, बाग़ और अंगूर, और समायु नवयुवतियाँ, और छलकते हुए प्याले। वहाँ कोई व्यर्थ और झूठी बात वे न सुनेंगे। बदला और पर्याप्त पुरस्कार तुम्हारे प्रभु की ओर से, उस अत्यन्त करुणामय ईश्वर की ओर से जो धरती और आकाशों का और उनके बीच की प्रत्येक चीज़ का मालिक है, जिसके सामने किसी को बोलने का साहस एवं बल नहीं।

जिस दिन रूह और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे, कोई न बोलेगा सिवाय उसके जिसे रहमान (करुणामय) अनुज्ञा दे और जो ठीक बात कहे। वह दिन सत्य है, अब जिसका जी चाहे अपने प्रभु की ओर पलटने का मार्ग अपनाए।

हमने तुम लोगों को उस यातना से डरा दिया है जो क़रीब आ लगी है। जिस दिन मनुष्य वह सब कुछ देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और इनकार करनेवाला पुकार उठेगा कि काश मैं मिट्टी होता। —78 : 17-40

परहेज़गार लोगों के लिए जिस जन्नत का वचन दिया गया है उसकी शान तो यह है कि उसमें नहरें बह रही होंगी निथरे हुए पानी की; नहरें बह रही होंगी ऐसे दूध की जिसके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा; नहरें बह रही होंगी ऐसे पेयों की जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट होंगी, नहरें बह रही होंगी सुथरे-स्वच्छ मधु की। उसमें उनके लिए हर प्रकार के फल होंगे और उनके प्रभु की ओर से क्षमा। (क्या वह व्यक्ति जिसके हिस्से में यह जन्नत आनेवाली है) उन लोगों की तरह हो सकता है जो नरक में सदैव रहेंगे और जिन्हें ऐसा खौलता जल पिलाया जाएगा जो उनकी आँतें तक काट देगा? — 47 : 15

आनेवाली घड़ी निकट आ लगी है, अल्लाह के सिवा कोई उसको हटानेवाला नहीं। अब क्या यही वे बातें हैं जिन पर तुम आश्चर्य प्रकट करते हो? हँसते हो और रोते नहीं हो? और गा-बजाकर उन्हें टालते हो? झुक जाओ अल्लाह के आगे और बन्दगी करो। —53 : 57-62

हे लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो, और प्रत्येक व्यक्ति यह देखे कि उसने कल के लिए क्या सामान किया है। अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह को निश्चय ही तुम्हारे उन सब कर्मों की ख़बर है जो तुम करते हो। उन लोगों की तरह न हो जाओ, जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें स्वयं उनकी अपनी आत्मा भुला दी, यही लोग उल्लंघनकारी हैं। —59 : 18-19

(अल्लाह कहेगा,) "अब तुम वैसे ही अकेले हमारे सामने उपस्थित हो गए, जैसा हमने तुम्हें पहली बार अकेला पैदा किया था, जो कुछ हमने तुम्हें दुनिया

में दिया था वह सब तुम पीछे छोड़ आए हो, और अब हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते जिनके संबंध में तुम समझते थे कि तुम्हारे काम बनाने में उनका भी कुछ हिस्सा हैं, तुम्हारे आपस के सब सम्पर्क टूट गए और वे सब तुमसे गुम हो गए जिनका तुम दावा रखते थे।" —6 : 94

भलाई-बुराई

हमने लुक़मान को हिकमत (तत्त्वदर्शिता) प्रदान की थी कि अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दिखाओ। जो कोई कृतज्ञता दिखाए उसकी कृतज्ञता उसके अपने ही लिए लाभदायक है। और जो इनकार और कृतघ्नता विज्ञप्त करे तो वास्तव में अल्लाह अपेक्षामुक्त और आप-से-आप प्रशंसित है।

याद करो जब लुक़मान अपने बेटे को सदुपदेश दे रहा था तो उसने कहा, "बेटा अल्लाह के साथ किसी को सम्मिलित न करना, यह सत्य है कि बहुदेववाद बहुत बड़ा ज़ुल्म है"— और यह वास्तविकता है कि हमने मनुष्य को अपने माता-पिता का हक़ पहचानने की स्वयं ताकीद की है। उसकी माता ने शक्ति क्षीणता पर शक्ति क्षीणता झेलकर उसे अपने पेट में रखा और दो वर्ष उसका दूध छूटने में लगे। (इसीलिए हमने उसे नसीहत की कि) मेरे प्रति कृतज्ञता दिखाओ और अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञ हो, मेरी ही ओर तुझे पलटना है। किन्तु वे तुझ पर दबाव डालें कि मेरे साथ तू किसी ऐसे को सम्मिलित करे जिसे तू नहीं जानता तो तू उनकी बात कदापि न मान। दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रह, किन्तु चल उस व्यक्ति के मार्ग पर जिसने मेरी ओर रुजू किया है। फिर तुम सबको पलटना मेरी ही ओर है, उस समय मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम कैसे कर्म करते रहे हो।

(और लुक़मान ने कहा था कि) "बेटा, कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो और किसी चट्टान में या आकाशों या धरती में कहीं छुपी हुई हो अल्लाह उसे निकाल लाएगा। वह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखनेवाला है। बेटा, नमाज़ क़ायम कर, नेकी का आदेश दे, बुराई से रोक और जो मुसीबत भी पड़े उस पर धैर्य्य से काम ले। ये वे बाते हैं जिनकी बड़ी ताकीद की गई है। और लोगों से मुख फेर कर बात न कर, न धरती में अकड़कर चल, अल्लाह किसी अहंकारी और आत्मश्लाघी को पसंद नहीं करता। अपनी चाल में संतुलन रख और अपनी आवाज़ तनिक नीची रख, सब आवाज़ों से अधिक बुरी आवाज़ गदहों की आवाज़ होती है।"
—31 : 12-19

तो अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना नहीं तो तिरस्कृत और असहाय बैठा रह जाएगा।

तेरे प्रभु ने निर्णय कर दिया है कि तुम लोग किसी की बंदगी न करो, किन्तु केवल उसकी। माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, यदि तुम्हारे पास उनमें

से कोई एक, या दोनों, बूढ़े होकर रहें तो उन्हें उफ़ तक न कहो, न उन्हें झिड़ककर उत्तर दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो। और नम्रता और दयालुता के साथ उनके सामने झुककर रहो, और प्रार्थना किया करो कि "पालनहार, इन पर दया कर जिस प्रकार इन्होंने दयालुता और करुणा के साथ मुझे बचपन में पाला था।" तुम्हारा प्रभु भली-भाँति जानता है कि तुम्हारे हृदयों में क्या है, यदि तुम नेक बनकर रहो तो वह ऐसे सब लोगों के लिए क्षमाशील है जो अपनी ग़लती पर सावधान होकर बन्दगी की नीति की ओर पलट आएँ। नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को उसका हक़। अपव्यय न करो। अपव्यय करनेवाले लोग शैतान के भाई हैं और शैतान अपने प्रभु का कृतघ्न है। यदि इनसे (अर्थात् मुहताज नातेदारों, ग़रीबों और मुसाफ़िरों से) तुम्हें कतराना हो, इस कारण की अभी तुम अल्लाह की उस दयालुता को जिसके तुम प्रत्याशी हो, तलाश कर रहे हो, तो उन्हें नर्म उत्तर दे दो। न तो अपना हाथ गर्दन से बाँध रखो और न उसे बिल्कुल ही खुला छोड़ दो कि निन्दित और बेबस बनकर रह जाओ। तेरा प्रभु जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है, जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। वह अपने बंदों के हाल की ख़बर रखता है और उन्हें देख रहा है। अपनी संतान की निर्धनता के भय से हत्या न करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। वास्तव में उनकी हत्या एक बड़ी ख़ता है। व्यभिचार के निकट न फटको; वह बहुत बुरा कर्म है और बड़ा ही बुरा रास्ता है। किसी जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाय इसके कि हक़ और इनसाफ़ को यही अपेक्षित हो। और जिसकी हत्या अत्याचारपूर्वक की गई हो उसके वली को हमने हत्यादण्ड की माँग का अधिकार प्रदान किया है, अतः चाहिए कि वह वध में सीमा से आगे न बढ़े, उसकी सहायता की जाएगी। अनाथ के माल के पास न फटको सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए। (उस समय तुम उसका माल उसे सौंप दो।) प्रतिज्ञा का अनुपालन करो, निस्संदेह, प्रतिज्ञा के विषय में तुम्हें उत्तर देना होगा। पैमाने से दो तो पूरा भरकर दो और तौलो तो ठीक तराज़ू से तौलो, यह अच्छा तरीक़ा है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है। किसी ऐसी चीज़ के पीछे न लगो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो। निश्चय ही आँख, कान और दिल सब ही के विषय में पूछा जाएगा। धरती में अकड़कर न चलो, तुम न धरती को फ़ाड़ सकते हो, न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो।

इनमें से हर एक का बुरा पहलू तेरे प्रभु की दृष्टि में अप्रिय है। ये वे

तत्त्वदर्शिता की बातें हैं, जिनकी प्रकाशना तेरे प्रभु ने तुझ पर की है।

और देख ! अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना बैठ, नहीं तो तू नरक में डाल दिया जाएगा, निन्दित और हर भलाई से वंचित होकर।

—17 : 22-39

अल्लाह न्याय और भलाई और नातेदारों के हक़ अदा करने का आदेश देता है और बुराई और अश्लीलता और अत्याचार और ज़्यादती से रोकता है। वह तुम्हें सदुपदेश देता है, ताकि तुम शिक्षा लो। अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो जबकि उससे कोई प्रतिज्ञा की हो, और अपनी सौगन्ध सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग न करो जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बना चुके हो। अल्लाह तुम्हारे सब कर्मों को जानता है। —16 : 90-91

अल्लाह के आज्ञाकारी
(मोमिन)

बड़ी बरकतवाला है वह ज़िसने आकाश में बुर्ज (राशि) बनाए और उसमें एक चिराग़ और एक चमकता चन्द्रमा प्रकाशमान किया। वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आनेवाला बनाया, हर उस व्यक्ति के लिए जो शिक्षा लेनी चाहे, या कृतज्ञ होना चाहे।

रहमान के (वास्तविक) बंदे वे हैं जो धरती पर नर्म चाल चलते हैं और जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं कि तुमको सलाम। जो अपने प्रभु के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं। जो प्रार्थनाएँ करते हैं कि "हे हमारे प्रभु, नरक की यातना से हमको बचा ले, उसकी यातना तो प्राण को लागू है, वह तो बड़ी ही बुरी ठहरने की जगह और स्थान है।" जो ख़र्च करते हैं तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता से काम लेते हैं, बल्कि उनका ख़र्च दोनों आत्यन्तिकताओं के बीच सन्तुलन पर स्थिर रहता है। जो अल्लाह के सिवा किसी और पूज्य को नहीं पुकारते, अल्लाह के वर्जित किए हुए किसी जीव का नाहक़ वध नहीं करते और न व्यभिचार करते हैं— ये काम जो कोई करेगा वह अपने गुनाह का बदला पाएगा, पुनरुज्जीवन के दिन उसको दुगनी यातना दी जाएगी और उसी में वह अपमान सहित पड़ा रहेगा। यह और बात है कि कोई (इन गुनाहों के पश्चात्) तौबा कर चुका हो और ईमान लाकर अच्छा कर्म करने लगा हो। ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और वह बड़ा क्षमाशील, दयावन्त है। जो व्यक्ति तौबा क़रके अच्छा क़र्म करता है वह तो अल्लाह की ओर पलट आता है जैसा कि पलटने का हक़ है— और रहमान के बंदे वे हैं जो झूठ के गवाह नहीं बनते और किसी बेहूदा चीज़ पर उनका गुज़र हो जाए तो सज्जन आदमियों की तरह गुज़र जाते हैं। जिन्हें यदि उनके प्रभु की आयतें सुनाकर नसीहत की जाती है तो वे उस पर अंधे और बहरे बनकर नहीं रह जाते। जो प्रार्थनाएँ किया करते हैं कि "हे हमारे प्रभु, हमें अपनी पत्नियों और संतान से आँखों की ठंडक दे और हमको डर रखनेवालों का नायक बना— ये हैं वे लोग, जो अपने धैर्य्य का फल उच्च भवन के रूप में पाएँगे। आदर सूचक शब्दों और सलाम से उनका स्वागत होगा। वे सदा सर्वदा वहाँ रहेंगे। क्या ही अच्छी है वह ठहरने की जगह और स्थान।

—25 : 61-76

ईमान लानेवालों का काम तो यह है कि जब वे अल्लाह और रसूल की ओर बुलाए जाएँ, ताकि रसूल उनके मुक़द्दमे का फ़ैसला करे तो वे कहें कि हमने सुना और आज्ञा का पालन किया। ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करनेवाले हैं, और सफल वही हैं जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करें और उसकी अवज्ञा से बचें। —24 : 51-52

ऐसे लोग जिन्हें व्यापार और क्रय-विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात (दान) देने से ग़ाफ़िल नहीं करता। वे उस दिन से डरते रहते हैं, जिसमें दिल उलटने और आँखें पथरा जाने की नौबत आ जाएगी। —24 : 37

ये वे लोग हैं जिन्हें यदि हम धरती में सत्ता एवं आधिपत्य प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, दान देंगे, नेकी का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे।

—22 : 41

निश्चय ही सफलता पाई है ईमान लानेवालों ने जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाते हैं, व्यर्थ बातों से दूर रहते हैं, दान की नीति पर चलते हैं, अपने गुप्त अंगों की रक्षा करते हैं। —23 : 1-5

सत्य का इनकार करनेवाले
(काफ़िर)

जो लोग अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार फ़ैसला न करें वही काफ़िर (इनकार करनेवाले) हैं। —5 : 44

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इनकार की नीति अपनाते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे और इनकार और ईमान के बीच में एक राह निकालना चाहते हैं वे सब पक्के काफ़िर हैं, और ऐसे काफ़िरों के लिए हमने वह यातना तैयार कर रखी है, जो उन्हें अपमानित कर देनेवाली होगी। —4 : 150-151

जिन लोगों ने (इन बातों को स्वीकार करने से) इनकार कर दिया, उनके लिए बराबर है, चाहे तुम उन्हें सचेत करो या न करो, वे तो किसी भी दशा में माननेवाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों और उनके कानों पर मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर परदा पड़ गया है। वे कठोर यातना के भागी हैं। —2 : 6-7

जो लोग अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार फ़ैसला न करें वही काफ़िर हैं। —5 : 44

ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, ये अब न पलटेंगे। —2 : 18

कह दो कि हे काफ़िरों, मैं उनकी बन्दगी (इबादत) नहीं करता जिनकी बन्दगी तुम करते हो, न तुम उसकी बन्दगी करनेवाले हो जिसकी बन्दगी मैं करता हूँ। और न मैं उनकी बन्दगी करनेवाला हूँ जिनकी बन्दगी तुमने की है, और न तुम उसकी बन्दगी करनेवाले हो जिसकी बन्दगी मैं करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा। —109 : 1-6

निश्चय ही अल्लाह की दृष्टि में धरती पर चलनेवाले प्राणियों में सबसे बुरे वे लोग हैं जिन्होंने सत्य को मानने से इनकार (कुफ़्र) किया, फिर किसी प्रकार वे इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। —8 : 55

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, वे उसी प्रकार अपमानित एवं तिरस्कृत कर दिए जाएँगे जिस प्रकार उनसे पहले के लोग अपमानित एवं तिरस्कृत किए जा चुके हैं। हमने साफ़-साफ़ आयतें उतार दी हैं

और काफ़िरों के लिए अपमानजनक यातना है। उस दिन (यह अपमानजनक यातना होनी है) जब अल्लाह उन सबको फिर से जीवित करके उठाएगा और उन्हें बता देगा कि वे क्या कुछ करके आए हैं। वे भूल गए हैं किन्तु अल्लाह ने उनका सब किया-धरा गिन-गिनकर सुरक्षित रखा है और अल्लाह एक-एक चीज़ पर गवाह है। —58 : 5-6

कपटाचारी (मुनाफ़िक़ीन)

और अल्लाह को तो अवश्य यह देखना ही है कि ईमान लानेवाले कौन हैं और मुनाफ़िक़ कौन। —29 : 11

ये लोग कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया, किन्तु इसके पश्चात् इनमें से एक गिरोह (आज्ञा-पालन से) मुँह मोड़ जाता है। ऐसे लोग कदापि ईमानवाले नहीं हैं। जब उनको बुलाया जाता है अल्लाह और रसूल की ओर ताकि रसूल उनके आपस के मुक़द्दमे का फ़ैसला करे तो उनमें से एक फ़रीक़ कतरा जाता है। अलबत्ता यदि हक़ उनके पक्ष में हो तो रसूल के पास बड़े आज्ञाकारी बनकर आ जाते हैं। क्या इनके दिलों को (निफ़ाक़) का रोग लगा हुआ है? या 'ये संदेह में पड़े हुए हैं? या' इनको भय है कि अल्लाह और उसका रसूल इनपर ज़ुल्म करेगा? वास्तविकता यह है कि ज़ालिम ये लोग स्वयं हैं। —24 : 47-50

क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे बस इतना कहने पर छोड़ दिए जाएँगे कि 'हम ईमान लाए' और उनको आज़माया न जाएगा? हालाँकि हम उन सब लोगों की परीक्षा ले चुके हैं जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। अल्लाह को तो अवश्य यह देखना है कि सच्चे कौन हैं और झूठे कौन। — 29 : 2-3

उस दिन जबकि तुम ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को देखोगे कि उनका प्रकाश उनके आगे-आगे और उनकी दाईं ओर दौड़ रहा होगा। (उनसे कहा जाएगा कि) "आज शुभ सूचना है तुम्हारे लिए।" जन्नतें होंगी, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे। यही है बड़ी सफलता। उस दिन मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) पुरुषों और स्त्रियों का हाल यह होगा कि वे ईमानवालों से कहेंगे, "तनिक हमारी ओर देखो ताकि हम तुम्हारे प्रकाश से कुछ लाभ उठा लें।" किन्तु उनसे कहा जाएगा, "पीछे हट जाओ, अपना प्रकाश कहीं और तलाश करो।" फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक द्वार होगा। उस द्वार के भीतर दयालुता होगी और बाहर यातना। वे ईमानवालों से पुकार-पुकार कर कहेंगे, "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" ईमानवाले उत्तर देंगे, "हाँ, किन्तु तुमने अपने आपको स्वयं फ़ितने में डाला, अवसरवादिता से काम लिया, संदेह में पड़े रहे और झूठी आशाएँ तुम्हें धोखा देती रहीं, यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया और अन्तिम समय तक वह बड़ा धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा देता रहा। अतः

आज न तुमसे कोई फ़िदया (मुक्ति प्रतिदान) स्वीकार किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने खुल्लम- खुल्ला कुफ़्र (इनकार) किया था। तुम्हारा ठिकाना नरक है, वही तुम्हारी ख़बर लेनेवाला है और वह अत्यन्त बुरा परिणाम है।"

—57 : 12-15

मिथ्याचारी, पाखण्डी (मुनाफ़िक़) पुरुष और मिथ्याचारिणी (मुनाफ़िक़) स्त्रियाँ सब एक-दूसरे जैसे हैं। बुराई को कहते और भलाई से रोकते हैं और अपने हाथ भलाई से रोके रखते हैं। ये अल्लाह को भूल गए, तो अल्लाह ने भी इन्हें भुला दिया। निश्चय ही ये मिथ्याचारी ही अवज्ञाकारी हैं। इन मिथ्याचारी पाखण्डी पुरुषों और मिथ्याचारिणी स्त्रियों और काफ़िरों के लिए अल्लाह ने नरकाग्नि का वादा किया है जिसमें वे सदैव रहेंगे, वही इनके लिए उचित है। इन पर अल्लाह की फिटकार है और इनके लिए स्थिर रहनेवाली यातना है। —9 : 67-68

हे नबी, काफ़िरों और मिथ्याचारियों दोनों का पूरी शक्ति से मुक़ाबला करो और उनके साथ कठोर व्यवहार करो। अन्ततः इनका ठिकाना नरक है और वह ठहरने की अत्यन्त बुरी जगह है। —9 : 73

बहुदेववादी (मुशरिक) [1]

अल्लाह मेरा प्रभु भी है और तुम्हारा प्रभु भी, अतः तुम उसी की बन्दगी अपनाओ, यही सीधा मार्ग है। —3 : 51

अल्लाह का आदेश है कि "दो प्रभु-पूज्य न बना लो, प्रभु तो बस एक ही है, अतः तुम मुझी से डरो। उसी का है वह सब जो आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, और विशुद्ध धर्म उसी का (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में) चल रहा है। फिर क्या अल्लाह को छोड़कर तुम किसी और का डर रखोगे?

—16 : 51-52

किसी मनुष्य का यह काम नहीं कि अल्लाह तो उसको किताब और निर्णय-शक्ति और पैग़म्बरी प्रदान करे और वह लोगों से कहे कि "अल्लाह को छोड़कर तुम मेरे दास बन जाओ।" वह तो यही कहेगा कि सच्चे 'रब्बानी' (प्रभुसेवक) बनो, जैसा कि इस किताब की शिक्षा को अपेक्षित है जिसे तुम पढ़ते और पढ़ाते हो। —3 : 79

कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका समकक्ष और प्रतिद्वन्द्वी बनाते हैं और उनके प्रति ऐसे आसक्त हैं, जैसी अल्लाह के साथ आसक्ति होनी चाहिए— हालाँकि ईमान रखनेवाले लोगों को सबसे बढ़कर अल्लाह प्रिय होता है। —2 : 165

निस्संदेह अल्लाह इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका सहभगी ठहराया जाए, इसके सिवा दूसरे जितने पाप हैं वह जिनके लिए चाहता है क्षमा कर देता है। अल्लाह के साथ जिसने किसी और को साझी ठहराया उसने तो बहुत ही बड़ा झूठ रचा और घोर पाप की बात की। —4 : 48

वहाँ ये इनकार करनेवाले कहेंगे कि, "हे हमारे प्रभु, तनिक हमें दिखा दे उन जिन्नों और मनुष्यों को जिन्होंने हमें पथभ्रष्ट किया था, हम उन्हें पाँव तले रौंद डालेंगे ताकि वे अच्छी तरह अपमानित हों।" —41 : 29

और कहेंगे, "हे हमारे प्रभु, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों की आज्ञा का पालन किया और उन्होंने हमें संमार्ग से हटा दिया। हे प्रभो, उनको दोहरी यातना दे और उन पर बड़ी लानत कर।" —33 : 67-68

---

1. अल्लाह के साथ किसी और की उपासना करनेवाला या अल्लाह को छोड़कर दूसरों की उपासना करनेवाला।

तो क्या ये लोग, जिन्होंने इनकार किया है, यह समझते हैं कि मुझे छोड़कर मेरे बंदों को अपना कार्यसाधक बना लें? हमने ऐसे काफ़िरों की मेहमानी के लिए नरक तैयार कर रखा है। —18 : 102

एकाग्रचित्त होकर अल्लाह के बंदे बनो, उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ। और जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराए तो मानो वह आकाश से गिर गया, अब या तो उसे पक्षी उचक ले जाएँ या वायु उसको ऐसे स्थान पर ले जाकर फेंक दे जहाँ उसके चीथड़े उड़ जाएँ। —22 : 31

उसे छोड़कर तुम जिनकी बन्दगी कर रहे हो वे इसके सिवा कुछ नहीं हैं कि बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं।

—12 : 40

जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरे संरक्षक बना लिए हैं, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जो अपना एक घर बनाती है और सब घरों से अधिक कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है। क्या अच्छी बात होती कि ये लोग ज्ञान रखते। ये लोग अल्लाह को छोड़कर जिस चीज़ को भी पुकारते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है और वही प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

—29 : 41-42

निश्चय ही जिन लोगों ने कह दिया कि अल्लाह ही हमारा प्रभु है, फिर उस पर जम गए, उनके लिए न कोई भय है और न वे शोकाकुल होंगे। ऐसे लोग जन्नत में जानेवाले हैं जहाँ वे सदैव रहेंगे, अपने उन कर्मों के बदले जो वे दुनिया में करते रहे हैं। —46 : 13-14

वे लोग जिन्होंने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं (और अपने इस कर्म का कारण यह बताते हैं कि) हम तो उनकी उपासना केवल इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमारी पहुँच करा दें, अल्लाह निश्चय ही उनके बीच उन बातों का निर्णय कर देगा जिनमें वे मतभेद कर रहे हैं। अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को मार्ग नहीं दिखाता, जो झूठा और सत्य का इनकार करनेवाला हो।

—39 : 3

दौड़ो अल्लाह (प्रभु) की ओर

अत: दौड़ो अल्लाह की ओर। —51 : 50

अब जो लोग अल्लाह की बात मान लेंगे और उसकी शरण ढूँढ़ेंगे उनको अल्लाह अपनी दयालुता और अपने उदार अनुग्रह एवं अनुदान के दामन में ले लेगा और अपनी ओर आने का सीधा मार्ग उनको दिखा देगा। —4 : 175

फिर जो लोग उनकी बात मान लें और अपनी नीति का सुधार कर लें उनके लिए किसी भय और दुख का कोई अवसर नहीं है। —6 : 48

जबकि न धन लाभदायक सिद्ध होगा और न सन्तान, सिवाय इसके कि कोई व्यक्ति भला-चंगा हृदय लिए हुए अल्लाह के पास उपस्थित हो।

—26 : 88-89

जो बिना देखे रहमान (करुणामय ईश्वर) से डरता था, और जो आसक्त हृदय लिए हुए आया है। (कहा जाएगा) "प्रवेश करो जन्नत में सलामती के साथ।" वह दिन शाश्वत जीवन का दिन होगा। वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, और हमारे पास उससे अधिक भी बहुत कुछ उनके लिए है। —50 : 33-35

अच्छे से अच्छा काम करो कि अल्लाह अच्छे से अच्छा काम करने-वालों को चाहता है। —2 : 195

जो भी अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा और बुराई से बचकर रहेगा वह अल्लाह का प्रिय बनेगा, क्योंकि परहेज़गार लोग अल्लाह को पसन्द हैं।

—3 : 76

जिन लोगों ने अपने प्रभु का आमंत्रण स्वीकार कर लिया उनके लिए भलाई है। —13 : 18

अत: तुम अल्लाह ही की बन्दगी करो, "दीन" को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सावधान, विशुद्ध "दीन" अल्लाह का हक़ है। —39 : 2-3

दौड़ो और एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो अपने प्रभु के क्षमादान और जन्नत की ओर जिसका विस्तार आकाश और धरती जैसा है, जो तैयार की गई है उन लोगों के लिए जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हों। यह अल्लाह का उदार दान है जिसे चाहता है प्रदान करता है, और अल्लाह बड़ा अनुग्रहवाला है। —57 : 21

अल्लाह—सर्वशक्तिमान और शासक है

वही एक अल्लाह है जिसके सिवा कोई बन्दगी का हक़ नहीं रखता। उसी के लिए प्रशंसा है इस लोक में भी और परलोक में भी, शासन उसका है और उसी की ओर तुम सब पलटाए जानेवाले हो। —28 : 70

सब पर बलशाली, आकाशों और धरती का मालिक और उन सारी चीज़ों का मालिक है, जो उनके बीच हैं। —38 : 66

अतः उच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट। —20 : 114

गुनाह क्षमा करनेवाला और तौबा क़बूल करनेवाला है, कठोर यातना देनेवाला और बड़ा अनुग्रहवाला है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं, उसी की ओर सबको पलटना है। —40 : 3

वह उच्च श्रेणियोंवाला, सिंहासन का मालिक है। अपने बंदो में से जिस पर चाहता है अपने आदेश से रूह उतार देता है, ताकि वह मिलन के दिन से सावधान कर दे। —40 : 15

अतः तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूँगा, और मेरे आगे कृतज्ञता दिखाओ, अकृतज्ञ न बनो। —2 : 152

और हे नबी, मेरे बंदे यदि तुमसे मुझे पूछें, तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे निकट ही हूँ। पुकारनेवाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार पर कहें कि हम उपस्थित हैं और मुझको मानें। (यह बात तुम उन्हें सुना दो) कदाचित् वे सीधा मार्ग पा लें। —2 : 186

वास्तविकता यह है कि तेरा प्रभु तो लोगों पर बड़ा उदार अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते। —27 : 73

और जो कृतज्ञता दिखाता है उसका कृतज्ञता-प्रकाशन उसके अपने ही लिए लाभकारी है, अन्यथा कोई कृतघ्न हो तो मेरा प्रभु अपेक्षा रहित और स्वयं अपने में आप प्रतिष्ठित है। —27 : 40

ईश-सिंहासन के उठानेवाले फ़रिश्ते और वे जो सिंहासन के चतुर्दिक उपस्थित रहते हैं, सब अपने प्रभु की प्रशंसा के साथ उसकी तसबीह कर रहे हैं। वे उस पर ईमान रखते हैं और ईमानवालों के हक़ में क्षमा याचना करते

हैं। वे कहते हैं : "हे हमारे प्रभु, तू अपनी दयालुता और अपने ज्ञान के साथ हर चीज़ पर छाया हुआ है, अतः क्षमा कर दे और नरक की यातना से बचा ले उन लोगों को जिन्होंने तौबा की है और तेरा मार्ग ग्रहण कर लिया है। हे हमारे प्रभु, और दाखिल कर उनको सदैव रहनेवाली उन जन्नतों में जिनका तुमने उनसे वादा किया है और उनके माता-पिता और पत्नियों और सन्तान में से जो अच्छे हों (उनको भी वहाँ उनके साथ ही पहुँचा दे)। तू निस्संदेह सर्वशक्तिमान और तत्त्वदर्शी है। और बचा दे उनको बुराइयों से। जिसको तूने पुनरुज्जीवन के दिन बुराइयों से बचा दिया उस पर तूने बड़ी दया की, और यही बड़ी सफलता है।" —40 : 7-9

साफ़ कह दो कि मार्ग बस वही है जो अल्लाह ने बताया है। — 2 : 120

और वास्तविकता यह है कि तेरा प्रभु प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी। —26 : 104

और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे और ईमान वाले न थे। —7 : 72

अतः उसकी सामर्थ्य के चमत्कारों से असावधान न हो जाओ और धरती में बिगाड़ न पैदा करो। — 7 : 74

जो लोग हमारे लिए कोशिश करेंगे उन्हें हम अपने मार्ग दिखाएँगे। और निस्संदेह अल्लाह सुकर्मियों के साथ है। —29 : 69

और जान रखो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है। —8 : 24

हम उस (इनसान) की गरदन की रग से भी अधिक उससे निकट हैं।

—50 : 16

हर वह चीज़ जो आकाशों में है और हर वह चीज़ जो धरती में है केवल उस अल्लाह की तसबीह कर रही है, जो सम्राट है और अत्यन्त पवित्र, ज़बरदस्त और तत्त्वदर्शी।

इनसे कहो, वह बड़ा दयावान् है, उसी पर हम ईमान लाए हैं, और उसी पर हमारा भरोसा है। — 67 : 29

अत्यन्त श्रेष्ठ और उच्च है वह जिसके हाथ में (जगत् का) राज्य है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। जिसने मृत्यु और जीवन को आविष्कृत किया ताकि तुम लोगों को आज़माकर देखे कि तुम में से कौन अच्छे से अच्छा कर्म करनेवाला है, और वह प्रभुत्वशाली भी है और क्षमा करनेवाला भी।

जिसने ऊपर-तले सात आकाश बनाए। तुम रहमान (करुणामय ईश्वर) की रचना में किसी प्रकार की असंगति न पाओगे। फिर पलटकर देखो, कहीं तुम्हें ख़लल दिखाई देता है? बार-बार निगाह दौड़ाओ। तुम्हारी निगाह थककर असफल पलट आएगी।

हमने तुम्हारे निकटवर्ती आकाश को भव्य प्रदीपकों से सुसज्जित किया है और उन्हें शैतानों को मार भगाने का साधन बना दिया है। इन शैतानों के लिए भड़कती हुई आग हमने तैयार कर रखी है। —67 : 1-5

कहो प्रभो, राज्य के स्वामी, तू जिसे चाहे, राज्य दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसे चाहे शक्ति-सम्मान प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे। भलाई तेरे अधिकार में है। निस्संदेह, तुझे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

—3 : 26

कह दो कि "लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य आ चुका है, अब जो सीधा मार्ग अपनाए उसका सीधा मार्ग ग्रहण करना उसी के लिए लाभदायक है, और जो पथभ्रष्ट रहे उसकी पथभ्रष्टता उसी के लिए नाशकारी है। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवलदार नहीं हूँ।" —10 : 108

कोई मुसीबत ऐसी नहीं है जो धरती में या तुम्हारे अपने ऊपर उतरती हो और हमने उसको पैदा करने के पहले एक किताब (अर्थात् भाग्य पत्रिका) में लिख न रखा हो। ऐसा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान काम है। (यह सब कुछ इसलिए है) ताकि जो कुछ भी हानि तुम्हें हो उस पर तुम मलीन न हो और जो कुछ अल्लाह तुम्हें प्रदान करे उस पर फूल न जाओ। अल्लाह ऐसे लोगों को पसंद नहीं करता जो अपने आपको बड़ी चीज़ समझते हैं और डींगे मारते हैं। —57 : 22-23

क्या तुम जानते नहीं हो कि अल्लाह धरती और आकाशों के राज्य का अधिकारी है? जिसे चाहे दण्ड दे और जिसे चाहे क्षमाकर दे, उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। —5 : 40

अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं, जो उसके भरोसे पर काम करते हैं।

—3 : 159

अल्लाह तुम्हारी सहायता पर हो, तो कोई शक्ति तुम्हें नीचा दिखाने- वाली नहीं, और वह तुम्हें छोड़ दे, तो इसके बाद कौन है जो तुम्हारी सहायता कर सकता हो? अत: जो सच्चे ईमानवाले हैं उनको अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। —3 : 160

दीन के स्तम्भ

अल्लाह मेरा प्रभु भी है और तुम्हारा प्रभु भी, अतः तुम उसी की बंदगी अपनाओ, यही सीधा मार्ग है। —3: 15

पाठ करो उस किताब का जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है और नमाज़ क़ायम करो, निस्संदेह नमाज़ अश्लील और बुरे कामों से रोकती है और अल्लाह का ज़िक्र बड़ी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। — 29 : 45

तुम जब उठो तो अपने प्रभु की प्रशंसा के साथ उसकी तसबीह करो, रात को भी उसकी तसबीह किया करो और सितारे जब पलटते हैं उस समय भी।

—52 : 48-49

हे ईमानवालो, तुम्हारे लिए व्रत (रोज़े) अनिवार्य कर दिए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किए गए थे। इससे आशा है कि तुम में धर्मपरायणता का गुण पैदा होगा। —2 : 183

और ऐसे लोग भी अल्लाह को प्रिय नहीं हैं जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी पर उभारते हैं और जो कुछ अल्लाह ने अपने उदारदान के अन्तर्गत उन्हें दिया है उसे छुपाते हैं। ऐसे अकृतज्ञ लोगों के लिए हमने अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। —4 : 37

जो लोग अपने धन अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं और ख़र्च करके फिर एहसान नहीं जताते, न दुख देते हैं, उनकी मज़दूरी उनके प्रभु के पास है और उनके लिए किसी शोक और भय का अवसर नहीं। —2 : 262

तुम नेकी को पा नहीं सकते जब तक कि अपनी वे वस्तुएँ (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो जो तुम्हें प्रिय हैं, और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे अल्लाह उससे बेख़बर न होगा। —3 : 92

लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जिसको इस घर तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो वह इसका हज करे। —3 : 97

हे लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुम ईशपरायणता की नीति अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए कसौटी जुटा देगा और तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर करेगा और तुम्हारे क़सूर माफ़ करेगा। अल्लाह बड़ा अनुग्राहक है।

—8 : 29

अल्लाह की राह में जी तोड़ संघर्ष
(जिहाद)

हे लोगो, जो ईमान लाए हो, मैं बताऊँ तुमको वह व्यापार जो तुम्हें दुखदायिनी यातना से बचा दे ? ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, और जिहाद करो अल्लाह के मार्ग में अपने मालों से और अपने प्राणों से । यही तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम जानो । —61 : 10-11

अल्लाह के यहाँ तो उन्हीं लोगों का पद बड़ा है जो ईमान लाए और जिन्होंने उसके मार्ग में घरबार छोड़े और जान और माल से संघर्ष किया, वही सफल हैं । —9 : 20

अल्लाह के मार्ग में जान तोड़ कोशिश (जिहाद) करो जैसे कि कोशिश (जिहाद) करने का हक़ है ! उसने तुम्हें अपने कार्य के लिए चुन लिया है ।

—22 : 78

(अत:) हे लोगो जो ईमान लाए हो, मुक़ाबले के लिए हर समय तैयार रहो । —4 : 71

आख़िर क्या कारण है कि तुम अल्लाह के मार्ग में उन बेबस पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए न लड़ो जो निर्बल पाकर दबा लिए गए हैं और फ़रियाद कर रहे हैं कि हे प्रभो ! हमको इस बस्ती से निकाल, जिसके लोग ज़ालिम हैं, और अपनी ओर से हमारा कोई समर्थक और सहायक पैदा कर दे । जिन लोगों ने ईमान का रास्ता अपनाया है वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं और जिन्होंने अधर्म का मार्ग अपनाया है, वे बढ़े हुए फ़सादी की राह में लड़ते हैं, अत: शैतान के साथियों से लड़ो और विश्वास रखो कि शैतान की चालें वास्तव में बहुत ही कमज़ोर हैं । —4 : 75-7

हत्या-दण्ड (क़सास)

बुद्धि और समझवालो, तुम्हारे लिए हत्यादण्ड में जीवन है। आशा है कि तुम इस विधान के उल्लंघन से बचोगे। —2 : 179

जो कुछ भी तुम लोगों को दिया गया है वह केवल कुछ थोड़े दिनों के सांसारिक जीवन की सामग्री है, और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह अच्छा भी है और शेष रहनेवाला भी। वह उन लोगों के लिए है जो ईमान लाए हैं और अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं, जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और यदि क्रोध आ जाए तो क्षमा कर जाते हैं, जो अपने प्रभु का आदेश मानते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, अपने मामले आपस के परामर्श से चलाते हैं, हमने जो कुछ भी आजीविका उन्हें दी है उसमें से ख़र्च करते हैं, और जब उन पर ज़्यादती की जाती है तो उसका मुक़ाबला करते हैं— बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, फिर जो कोई क्षमा कर दे और सुधार करे उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है, अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता। और जो लोग ज़ुल्म होने के पश्चात् बदला लें तो उनकी निन्दा नहीं की जा सकती। निन्दनीय तो वे हैं जो दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखदायिनी यातना है। अलबत्ता जो व्यक्ति धैर्य से काम ले और क्षमा करे, तो यह बड़े साहसपूर्ण कामों में से है। —42 : 36-53

युद्ध (जंग)

अल्लाह के मार्ग में जान तोड़ कोशिश करो, जैसे कि कोशिश करने का हक़ है। —22 : 78

और संघर्ष करो अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ, यह तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम जानो। —9 : 41

और तुम अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो, जो तुमसे लड़ते हैं, परन्तु ज़्यादती न करो कि अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को चाहता नहीं। —2 : 190

तुम्हें लड़ाई का आदेश दिया गया है और वह तुम्हें अप्रिय है—हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वही तुम्हारे लिए अच्छी हो और सम्भव है कि एक चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वही तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। —2 : 216

अल्लाह के मार्ग में लड़ना चाहिए उन लोगों को, जो परलोक के बदले सांसारिक जीवन को बेच दें, फिर जो अल्लाह के मार्ग में लड़ेगा और मारा जाएगा या विजयी रहेगा उसे अवश्य हम मज़दूरी प्रदान करेंगे। —4 : 74

वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने ईमानवालों से उनके प्राण और उनके माल जन्नत (स्वर्ग) के बदले ख़रीद लिए हैं। वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते और मारते और मरते हैं। तौरात और इंजील और क़ुरआन में अल्लाह के अपने ज़िम्मे उनसे एक पक्का वादा (जन्नत का वादा) है। और कौन है जो अल्लाह से बढ़कर अपने दिए हुए वचन को पूरा करनेवाला हो? अतः ख़ुशियाँ मनाओ अपने उस सौदे पर जो तुमने अल्लाह से चुका लिया है, यही सबसे बड़ी सफलता है। अल्लाह की ओर बार-बार पलटनेवाले, उसकी बन्दगी करनेवाले, उसकी प्रशंसा के गुन गानेवाले, उसके लिए धरती में चक्कर लगानेवाले, उसके आगे झुकने और सजदे करनेवाले, भलाई का हुकम देनेवाले, बुराई से रोकने और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करनेवाले, (इस शान के होते हैं वे ईमानवाले जो अल्लाह से सौदे का यह मामला तय करते हैं) और हे नबी, इन ईमानवालों को शुभ सूचना दे दो। —9 : 111-112

विजय (फ़तह)

अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही विजयी होकर रहेंगे। वास्तव में अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्त्वशाली और बलवान है। —58 : 21

अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए। वे अल्लाह की पार्टी के लोग हैं। सुन लो, अल्लाह की पार्टीवाले ही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। —58 : 22

मदद तो जब भी होती है अल्लाह ही की ओर से होती है। निस्संदेह, अल्लाह अत्यन्त प्रभावशील और तत्त्वदर्शी है। —8 : 10

डर (ख़ौफ़)

अतः तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझसे डरो । —5 : 44

और यह कि "हम समझे थे कि न धरती में हम अल्लाह को बेबस कर सकते हैं और न भाग कर उसे हरा सकते हैं ।" —72 : 12

और यह कि "हमने जब मार्गदर्शन की बात सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए। अब जो कोई भी अपने प्रभु पर ईमान ले आएगा, उसे न इसका कोई भय होगा कि उसका हक़ मारा जाएगा और न इसका कि उसके साथ कोई अत्याचार (ज़ुल्म) होगा ।" —72 : 13

मौत

कोई प्राणी अल्लाह की अनुमति के बिना नहीं मर सकता। —3 : 145

और न किसी व्यक्ति को यह ख़बर है कि किस भूभाग में उसको मृत्यु आनी है, अल्लाह ही सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है।

—31 : 34

हर जानदार को मृत्यु का मज़ा चखना है, और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा ले रहे हैं। आख़िरकार तुम्हें हमारी ही ओर पलटना है। —21 : 35

जब किसी के कर्म करने की मोहलत पूरी होने का समय आ जाता है, तो अल्लाह किसी व्यक्ति को कदापि और अधिक मोहलत नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। —63 : 10

अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसकी तसबीह करो, उसकी सेवा में सजदा करो, और उस अन्तिम घड़ी तक अपने प्रभु की बन्दगी करते रहो जिसका आना यक़ीनी है। —15 : 98-99

अतः हे हमारे स्वामी, जो अपराध हम से हुए हैं उनको क्षमा कर दे, जो बुराइयाँ हम में हैं, उन्हें दूर कर दे और हमारा अन्त (मृत्यु) नेक लोगों के संग कर। —3 : 193

लापरवाही

अत: हे नबी, जो व्यक्ति हमारे ज़िक्र से मुँह फेरता है और सांसारिक जीवन के सिवा जिसे कुछ अभीष्ट नहीं है, उसे उसके हाल पर छोड़ दो।

—53 : 29

इन ज़ालिमों की ओर तनिक भी न झुकना, नहीं तो नरक की लपेट में आ जाओगे और तुम्हें ऐसा कोई मित्र और संरक्षक न मिलेगा जो अल्लाह से तुम्हें बचा सके और कहीं से तुमको सहायता न पहुँचेगी। —11 : 113

तुम कभी यह न पाओगे कि जो लोग अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखनेवाले हैं वे उन लोगों से प्रेम करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया है, चाहे वे उनके बाप हों, या उनके बेटे, या उनके भाई या उनके घरानेवाले। —58 : 22

हे लोगो जो ईमान लाए हो, उन लोगों को संरक्षक-मित्र न बनाओ जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ है, जो आख़िरत (परलोक) से उसी प्रकार निराश हैं, जिस प्रकार क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर निराश हैं। —60 : 13

अल्लाह अच्छे नामों का पात्र है, उसको अच्छे ही नामों से पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नाम रखने में सच्चाई से हट जाते हैं। जो कुछ वे करते हैं उसका बदला वे पाकर रहेंगे। —7 : 180

लोगों के लिए मन-पसन्द चीज़ें—स्त्रियाँ, सन्तान, सोने-चाँदी के ढेर, चुने घोड़े, चौपाए और खेती की भूमियाँ—बड़ी लुभावनी बना दी गई हैं, किन्तु ये सब, कुछ दिनों के जीवन की सामग्री हैं। वास्तव में जो अच्छा ठिकाना है, वह तो अल्लाह के पास है। कहो, मैं तुम्हें बताऊँ कि इनसे अधिक अच्छी चीज़ क्या है? जो धर्मपरायणता की नीति अपनाएँ, उनके लिए उनके प्रभु के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वहाँ उन्हें सदैव का जीवन प्राप्त होगा, स्वच्छ जोड़े होंगे और अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त होगी। अल्लाह अपने बंदों की नीति पर गहरी दृष्टि रखता है। ये वे लोग हैं, जो कहते हैं कि "मालिक, हम ईमान लाए, हमारी ख़ताओं को क्षमा कर और हमें नरकाग्नि से बचा ले।" ये लोग धैर्य से काम लेनेवाले हैं, सत्यवान हैं, आज्ञाकारी और दानशील हैं और रात की अन्तिम घड़ियों में अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करते हैं। —3 : 14-17

धोखा

और यह सांसारिक जीवन कुछ नहीं है, किन्तु एक खेल और दिल का बहलावा। वास्तविक जीवन का घर तो पारलौकिक घर है, क्या ही अच्छा होता कि ये लोग जानते। —29 : 64

रहा यह संसार, तो यह केवल एक बाह्य धोखे की चीज़ है। —3 : 185

तुम लोगों को अधिक से अधिक और एक-दूसरे से बढ़कर दुनिया प्राप्त करने की धुन ने बेसुध कर रखा है, यहाँ तक कि (इसी चिन्ता में) तुम क़ब्र के किनारे तक पहुँच जाते हो। फिर सुन लो कदापि नहीं, शीघ्र ही तुमको मालूम हो जाएगा ! कदापि नहीं शीघ्र ही तुमको मालूम हो जाएगा ! कदापि नहीं, यदि तुम विश्वसनीय ज्ञान के रूप में इस नीति के परिणाम को जानते होते (तो तुम्हारी यह नीति न होती)—तुम नरक देखकर रहोगे, फिर (सुन लो कि) तुम बिलकुल विश्वास के साथ उसे देख लोगे। फिर अवश्य ही उस दिन तुमसे इन नेमतों के विषय में जवाब तलब किया जाएगा। —102 : 1-8

भली-भाँति जान लो कि यह सांसारिक जीवन इसके सिवा कुछ नहीं कि एक खेल और दिल्लगी और ऊपरी टीप-टाप और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना और धन और सन्तान में एक-दूसरे से बढ़ जाने की कोशिश करना है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक वर्षा हो गई तो उससे पैदा होनेवाली वनस्पति को देखकर किसान ख़ुश हो गए। फिर वही खेती पक जाती है और तुम देखते हो कि वह पीली हो गई। फिर वह भुस बनकर रह जाती है। इसके विपरीत परलोक वह स्थान है जहाँ कठोर यातना है और अल्लाह का क्षमादान और प्रसन्नता है। सांसारिक जीवन एक धोखे की टट्टी के सिवा कुछ नहीं। —57 : 20

अल्लाह—सबका स्रष्टा और परम सत्य है

वह कुशल महास्रष्टा है। वह तो जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसका काम बस यह है कि उसे कह दे कि हो जा! और वह हो जाती है। पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ का पूर्ण आधिपत्य है, और उसी की ओर तुम पलटाए जानेवाले हो। —36 : 81-83

अल्लाह ने धरती और आकाशों को और उन सभी चीज़ों को जो उनके बीच हैं सत्यानुकूल और एक नियत समय ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत-से लोग अपने प्रभु के मिलने का इनकार करते हैं। —30 : 8

और वह अल्लाह ही है जिसने रात को तुम्हारे लिए वस्त्र और निद्रा को मृत्यु की शांति, और दिन को जी उठने का समय बनाया। —25 : 47

प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो आकाशों और धरती का बनानेवाला और फ़रिश्तों को संदेश-वाहक (जो रसूलों तक संदेश पहुँचाते हैं) नियुक्त करनेवाला है, (ऐसे फ़रिश्ते) जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार भुजाएँ हैं। वह अपनी सृष्टि-सरंचना में जैसी चाहता है अभिवृद्धि करता है। निस्संदेह, अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। अल्लाह जिस दयालुता का द्वार भी लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकनेवाला नहीं और जिसे वह बन्द कर दे उसे अल्लाह के बाद फिर कोई दूसरा खोलनेवाला नहीं। वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है। —35 : 1-2

अल्लाह चरित्रवानों को पसन्द करता है

तुमने उन लोगों को भी देखा जो अपने पवित्रात्मा होने का बहुत दम भरते हैं? हालाँकि पवित्रता तो अल्लाह ही जिसे चाहता है प्रदान करता है, और (उन्हें जो पवित्रता नहीं मिलती तो वास्तव में) उन पर कण भर भी ज़ुल्म नहीं किया जाता। —4 : 49

और धरती और आकाशों की हर चीज़ का मालिक अल्लाह ही है—ताकि अल्लाह बुराई करनेवालों को उनके कर्म का बदला दे और उन लोगों को अच्छा प्रतिदान प्रदान करे जिन्होंने अच्छी नीति अपनाई है, जो बड़े-बड़े गुनाहों और खुले-खुले अश्लील कर्मों से बचते हैं, यह और बात है कि कुछ क़सूर उनसे हो ही जाय। निस्संदेह, तेरे प्रभु का क्षमा का दामन बहुत विस्तृत है। वह तुम्हें उस समय से भली-भाँति जानता है जब उसने धरती से तुम्हें पैदा किया और जब तुम अपनी माताओं के पेट में अभी भ्रूण अवस्था ही में थे। अतः अपनी पवित्रता के दावे न करो, वही भली-भाँति जानता है कि वास्तव में डर रखनेवाला कौन है। —53 : 31-32

प्रत्येक के लिए एक रुख़ है जिसकी ओर वह मुड़ता है। अतः तुम भलाइयों की ओर अग्रसरता दिखाओ। जहाँ भी तुम होगे, अल्लाह तुम्हें पा लेगा। उसकी सामर्थ्य-परिधि से कोई चीज़ बाहर नहीं। —2 : 148

दौड़कर चलो उस मार्ग पर जो तुम्हारे प्रभु के क्षमादान और उस जन्नत (स्वर्ग) की ओर जाता है जिसका विस्तार धरती और आकाशों जैसा है और वह अल्लाह से डरनेवालों के लिए तैयार की गई है जो प्रत्येक दशा में अपने माल ख़र्च करते हैं। चाहे बुरे हाल में हों या अच्छे हाल में, जो गुस्से को पी जाते हैं और दूसरे के क़सूर को क्षमा कर देते हैं—ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत प्रिय हैं—और जिनका हाल यह है कि यदि कभी कोई अश्लील कार्य उनसे हो जाता है या किसी गुनाह में पड़कर वे अपने ऊपर अत्याचार कर बैठते हैं तो तत्काल अल्लाह उन्हें याद आ जाता है और उससे वे अपने क़सूरों की क्षमा चाहते हैं— क्योंकि अल्लाह के सिवा और कौन है जो पाप क्षमा कर सकता हो— और वे जानते-बूझते अपने किए पर आग्रह नहीं करते। ऐसे लोगों की मज़दूरी उनके प्रभु के पास यह है कि वह उनको क्षमा कर देगा और ऐसे बाग़ों में उन्हें दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वहाँ वे सदैव रहेंगे।

कैसी अच्छी मज़दूरी है अच्छे कर्म करनेवालों के लिए। —3 : 133-136

और यह कि अन्ततः पहुँचना तेरे प्रभु ही के पास है, और यह कि उसी ने हँसाया और उसी ने रुलाया, और यह कि उसी ने मृत्यु दी और उसी ने जीवन प्रदान किया, और यह कि उसी ने नर और मादा का जोड़ा पैदा किया एक बूँद से, जब वह टपकाई जाती है, और यह कि दूसरा जीवन प्रदान करना भी उसी के ज़िम्मे है, और यह कि उसी ने धनी किया और सम्पत्ति प्रदान की।

—53 : 42-48

मुसलमान हो या यहूदी, साबी हो या ईसाई, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन को मानेगा और अच्छे कर्म करेगा, निस्संदेह, उसके लिए न कोई भय का अवसर है, न शोक का। —5 : 69

लोगो, हमने तुमको एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और फिर तुम्हारी जातियाँ और बिरादरियाँ बना दीं, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है, जो तुम में सबसे अधिक परहेज़गार है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है। —49 : 13

अल्लाह ने तुमको ईमान का प्रेम दिया और उसको तुम्हारे लिए प्रिय बना दिया। और कुफ़्र (इनकार) और पापाचार और अवज्ञा को तुम्हारे लिए अप्रिय कर दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के अनुग्रह और उपकार से सन्मार्ग पर हैं और अल्लाह सर्वज्ञ और तत्त्वदर्शी है। —49 : 7-8

उन चीज़ों से बचे रहें, जो अवैध ठहराई गई हैं और ईमान पर जमे रहें और अच्छे काम करें, फिर जिस-जिस चीज़ से रोका जाए उससे रुकें और जो ईश्वरीय आदेश हो उसे मानें, फिर अल्लाह से डरते हुए अच्छी नीति अपनाएँ। अल्लाह अच्छे चरित्रवालों को पसन्द करता है। —5 : 93

इनसे कह दो कि पवित्र और अपवित्र किसी दशा में समान नहीं हैं चाहे अपवित्र की बहुलता तुम्हें कितना ही रिझानेवाली हो। अतः हे लोगो जो बुद्धिमान हो, अल्लाह की अवज्ञा से बचते रहो, आशा है तुम्हें सफलता प्राप्त होगी। —5 : 100

सीमा का उल्लंघन न करो !

हे लोगो जो ईमान लाए हो, जो स्वच्छ चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए वैध की हैं, उन्हें अवैध न कर लो और सीमा का उल्लंघन न करो, अल्लाह को ज़्यादती करनेवाले प्रिय नहीं। —5 : 87

और जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेगा वह अपने ऊपर स्वयं ज़ुल्म करेगा। —65 : 1

और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे। —48 : 23

और अल्लाह का आदेश तो व्यवहार में आना ही चाहिए था। —33 : 37

अल्लाह की बातों को बदलने की शक्ति किसी में नहीं है। —6 : 34

तुम्हारे प्रभु की बात सच्चाई और न्याय की दृष्टि से पूर्ण है। —6 : 115

सुनो ! जो अल्लाह के मित्र हैं, जो ईमान लाए और जिन्होंने ईश- परायणता की नीति अपनाई, उनके लिए किसी भय और शोक का अवसर नहीं है। लोक और परलोक दोनों जीवन में उनके लिए शुभ सूचना-ही-शुभ सूचना है। अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। यही बड़ी सफलता है। —10 : 62-64

हे लोगो जो ईमान लाए हो, प्रतिबन्धनों का पूर्ण रूप से पालन करो।

—5 : 1

हे लोगो जो ईमान लाए हो, तुम क्यों वह बात कहते हो जो करते नहीं हो ? अल्लाह की दृष्टि में यह अत्यन्त अप्रिय काम है कि तुम कहो वह बात जो करते नहीं। —61 : 2-3

तुम दूसरों को तो नेकी का रास्ता अपनाने के लिए कहते हो, मगर अपने आपको भूल जाते हो ? हालाँकि तुम किताब का पाठ करते हो। क्या तुम बुद्धि से बिलकुल ही काम नहीं लेते ? —2 : 44

जो काम नेकी और ईश-भक्ति के हैं उनमें सबको सहयोग दो और जो गुनाह और ज़्यादती के काम हैं उनमें किसी को अपना सहयोग न दो। अल्लाह से डरो, उसका दण्ड बड़ा कठोर है। — 5 : 2

और जो कुछ अल्लाह ने तुममें से किसी को दूसरे के मुक़ाबले में अधिक दिया है, उसकी कामना न करो। जो कुछ पुरुषों ने कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा है और जो कुछ स्त्रियों ने कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा है। हाँ, अल्लाह से उसके उदारदान की प्रार्थना करते रहो, निस्संदेह, अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है। —4 : 32

पैमाने ठीक भरो, किसी को घाटा न दो। ठीक तराज़ू से तौलो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दो। धरती में बिगाड़ न फैलाते फिरो और उस सत्ता का डर रखो जिसने तुम्हें और विगत नस्लों को पैदा किया है। —26 : 181-184

और यह जान रखो कि अल्लाह उन्हीं लोगों के साथ है जो उसकी सीमाओं को तोड़ने से बचते हैं। —2 : 194

अल्लाह की फिटकार उन अत्याचारियों पर, जो अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते थे और परलोक का इनकार करनेवाले थे। —7 : 44-4

हे आदम के बेटो, हमने तुम पर परिधान (वस्त्र) उतारा है कि तुम्हारे शरीर के गुप्त अंगों को ढाँके और तुम्हारे लिए शरीर की रक्षा और सजावट का साधन भी हो, और उत्तम परिधान धर्मपरायणता का परिधान है। यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है, कदाचित् लोग इससे शिक्षा ग्रहण करें।

—7 : 26

तुम खुले गुनाहों से भी बचो और छुपे गुनाहों से भी, जो लोग गुनाह कमाते हैं वे अपनी इस कमाई का बदला पा कर रहेंगे। —6 : 120

डर रखनेवालों के लिए निश्चय ही अच्छे से अच्छा ठिकाना है।

—38 : 49

और उद्दण्डों के लिए अत्यन्त बुरा ठिकाना है। —38 : 55

अपव्यय (फ़ज़ूलख़र्ची) न करो। अपव्यय करनेवाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने प्रभु का कृतघ्न (नाशुक्रा) है। —17 : 27

आदेश

जिसने किसी मनुष्य को हत्या के बदले या धरती में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और कारण से मार डाला उसने मानो सारे ही मानवों की हत्या कर दी और जिसने किसी के प्राण बचाए उसने मानो सारे मानवों को जीवन-दान किया। —5 : 32

(अत:) किसी जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया है, सिवाय इसके कि हक़ और इनसाफ़ को यही अपेक्षित हो। और जिसकी हत्या अत्याचारपूर्वक की गई हो उसके वली को हमने हत्या-दण्ड की माँग का अधिकार प्रदान किया है। अत: चाहिए कि वह वध में सीमा से आगे न बढ़े; उसकी सहायता की जाएगी। —17 : 33

हे लोगो जो ईमान लाए हो, ये शराब और जुआ और देव-स्थान और पाँसे, ये सब गन्दे शैतानी काम हैं; इनसे बचो, आशा है कि तुम्हें सफलता प्राप्त होगी। —5 : 90

अल्लाह और उसके रसूल की बात मानो और बाज़ आ जाओ, लेकिन अगर अवहेलना की तो जान लो कि हमारे रसूल पर बस स्पष्टत: आदेश पहुँचा देने का दायित्व था। —5 : 92

और तुम लोग न तो आपस में एक-दूसरे के धन अवैध रूप से खाओ और न अधिकारी व्यक्तियों के आगे उनको इस ध्येय से प्रस्तुत करो कि तुम्हें दूसरों के धन का कोई भाग जान-बूझ कर हक़ मारकर खाने का अवसर मिल जाए। —2 : 188

अश्लील बातों के निकट भी न जाओ, चाहे वे खुली हों या छुपी।

—6 : 151

विनाश है हर उस झूठे-बुरे कर्मवाले व्यक्ति के लिए। —45 : 7

असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को संदिग्ध न बनाओ और न जानते- बूझते सत्य को छुपाने का प्रयास करो। —2 : 42

अल्लाह इसको पसंद नहीं करता कि आदमी अपशब्द के साथ ज़बान खोले, यह और बात है कि किसी पर ज़ुल्म किया गया हो, और अल्लाह सब कुछ सुनने और जाननेवाला है। —4 : 148

हे लोगो जो ईमान लाए हो, बहुत गुमान करने से बचो कि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। टोह में मत पड़ो और तुम में कोई किसी की पीठ-पीछे निन्दा

(ग़ीबत) न करे। क्या तुम में कोई ऐसा है जो अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसंद करेगा? देखो! तुम स्वयं इससे घिन खाते हो। अल्लाह से डरो, अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला और दयावान है। —49 : 11-12

निश्चय ही सफलता पाई है ईमान लानेवालों ने जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाते हैं, व्यर्थ बातों से दूर रहते हैं। —23 : 1-3

हे ईमान लानेवालो, अल्लाह से डरो और ठीक बात किया करो।—33 : 70

अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो। उन मर्यादाहीन लोगों की आज्ञा का पालन न करो जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं और कोई सुधार नहीं करते। —26 : 150-152

क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरा करते हैं? वे हर जाल रचनेवाले, दुष्कर्मी पर उतरा करते हैं। —26 : 221-222

जो लोग अल्लाह के आदेश और मार्गदर्शन को मानने से इनकार करते हैं और उसके पैग़म्बरों की नाहक़ हत्या करते हैं और ऐसे लोगों के प्राण लेने को उतारू हो जाते हैं, जो लोगों में से न्याय और सच्चाई का हुक्म देने के लिए उठें। उनको दुखदायनी यातना की शुभ सूचना दे दो। ये वे लोग हैं जिनके कर्म लोक और परलोक दोनों में अकारथ गए और उनका सहायक कोई नहीं है। —3 : 21-22

जो कोई अच्छा कर्म करेगा अपने ही लिए करेगा, और जो बुराई करेगा वह स्वयं ही उसका दण्ड भुगतेगा। फिर जाना तो सबको अपने प्रभु ही की ओर है। —45 : 15

क्या वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ की हैं यह समझे बैठे हैं कि हम उन्हें और ईमान लानेवालों और अच्छे कर्म करनेवालों को एक जैसा कर देंगे कि उनका जीना और मरना समान हो जाए? बहुत बुरे हुक्म हैं जो ये लोग लगाते हैं। अल्लाह ने तो आकाशों और धरती को हक़ के आधार पर पैदा किया है और इसलिए किया है कि प्रत्येक प्राणधारी को उसकी कमाई का बदला दिया जाए। लोगों पर ज़ुल्म कदापि न किया जाएगा।

फिर क्या तुमने कभी उस व्यक्ति की दशा पर भी विचार किया जिसने अपनी मन की इच्छा को अपना ईश-पूज्य बना लिया और अल्लाह ने ज्ञान के होते हुए उसे पथभ्रष्टता ही में फेंक दिया और उसके हृदय और कानों पर ठप्पा लगा दिया और उसकी आँखों पर परदा डाल दिया? अल्लाह के बाद अब और कौन है जो उसे मार्ग दिखाए? क्या तुम लोग कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

ये लोग कहते हैं कि "जीवन बस यही हमारा सांसारिक जीवन है, यहीं हमारा मरना और जीना है और दिनों के आवर्तन के सिवा कोई चीज़ नहीं जो हमें विनष्ट करती हो।" वास्तव में, इस मामले में इनके पास कोई ज्ञान नहीं है। ये केवल अटकल के आधार पर ये बातें करते हैं। —45 : 21-24

इनसे कहो, अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है, फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है, फिर वही तुमको उस क़ियामत (पुनरुज्जीवन) के दिन इकट्ठा करेगा जिसके आने में कोई संदेह नहीं, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।

—45 : 26

जो व्यक्ति करुणामय के स्मरण की उपेक्षा करता है, हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं और वह उसका साथी बन जाता है। ये शैतान ऐसे लोगों को संमार्ग पर आने से रोकते हैं और वे अपनी जगह यह समझते हैं कि हम ठीक जा रहे हैं। अन्ततः जब यह व्यक्ति हमारे यहाँ पहुँचेगा तो अपने शैतान से कहेगा, "काश ! मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम की दूरी होती, तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला।" —43 : 36-38

अब जो लोग अल्लाह की बात मान लेंगे और उसकी शरण ढूँढ़ेंगे उनको अल्लाह अपनी दयालुता और अपने उदार अनुग्रह एवं अनुदान के दामन में ले लेगा और अपनी ओर आने का सीधा मार्ग उनको दिखा देगा। —4 : 175

अच्छा कर्म करो, जो कुछ तुम करते हो उसको मैं देख रहा हूँ। —34 : 11

यह तुम्हारा धन और तुम्हारी सन्तान नहीं है जो तुम्हें हमसे निकट करती हो, हाँ मगर जो ईमान लाए और अच्छा कर्म करे। —34 : 37

जो लोग हमारे लिए कोशिश करेंगे, उन्हें हम अपना मार्ग दिखाएँगे और निस्संदेह, अल्लाह सुकर्मियों के साथ है। —29 : 69

अल्लाह का रंग ग्रहण करो। उसके रंग से अच्छा और किसका रंग होगा ? और हम उसी की बंदगी करनेवाले लोग हैं। —2 : 138

सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को दृढ़ता से पकड़ लो। — 3 : 103

हे लोगो, जो ईमान लाए हो ! अल्लाह को अधिक याद करो और प्रभात काल और संध्या समय उसकी तसबीह करते रहो। वही है जो तुम पर दयालुता दर्शाता है और उसके फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दयालुता की प्रार्थना करते हैं, ताकि वह तुम्हें अंधेरों से प्रकाश में निकाल लाए। वह ईमानवालों के लिए बड़ा दयावान है। जिस दिन वे उससे मिलेंगे, उनका स्वागत सलाम से होगा और उनके लिए अल्लाह ने बड़ा प्रतिष्ठित बदला तैयार कर रखा है।

—33 : 41-44

निश्चय ही जो पुरुष और जो स्त्रियां मुसलमान हैं, ईमानधारी हैं, आज्ञाकारी हैं, सत्यवादी हैं, धैर्यवान हैं, अल्लाह के आगे झुकनेवाले हैं, सदक़ा (दान) देनेवाले हैं, रोज़े (व्रत) रखनेवाले हैं, अपनी शर्मगाहों (गुप्त इन्द्रियों) की रक्षा करनेवाले हैं और अल्लाह को अधिक स्मरण करनेवाले हैं, अल्लाह ने उनके लिए क्षमादान और बड़ा बदला तैयार कर रखा है। —33 : 35

कहो, मेरे प्रभु ने तो सत्य और न्याय का आदेश दिया है। —7 : 29

और इनसाफ़ करो कि अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।
—49 : 9

नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को उसका हक़। फ़ुज़ूलख़र्ची न करो। निस्संदेह, फ़ुज़ूलख़र्ची करनेवाले लोग शैतान के भाई हैं और शैतान अपने "प्रभु" का कृतघ्न है। —17 : 26-27

तेरे प्रभु ने निर्णय कर दिया है कि तुम लोग किसी की बन्दगी न करो, किन्तु केवल उसकी। माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, यदि तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हें "उफ़" तक न कहो, और न उन्हें झिड़ककर उत्तर दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो। और नम्रता और दयालुता के साथ उनके सामने झुककर रहो और प्रार्थना किया करो कि—"पालनहार! इन पर दया कर जिस प्रकार इन्होंने दयालुता और करुणा के साथ मुझे बचपन में पाला था।" तुम्हारा प्रभु भली-भाँति जानता है कि तुम्हारे हृदयों में क्या है। —17 : 23-25

अपनी संतान की, निर्धनता के भय से, हत्या न करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। वास्तव में, उनकी हत्या एक बड़ी ख़ता है।

व्यभिचार के निकट न फटको। वह बहुत बुरा कर्म है और बड़ा ही बुरा रास्ता। —17 : 31-32

अनाथ के माल के पास न फटको सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए। प्रतिज्ञा का अनुपालन करो, निस्संदेह प्रतिज्ञा के विषय में तुम्हें उत्तर देना होगा।

पैमाने से दो तो पूरा भरकर दो, और तौलो तो ठीक तराज़ू से तौलो। यह अच्छा तरीक़ा है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।

किसी ऐसी चीज़ के पीछे न लगो, जिसका तुम्हें ज्ञान न हो। निश्चय ही आँख, कान और दिल सभी के विषय में पूछा जाएगा।

धरती में अकड़कर न चलो, तुम न धरती को फाड़ सकते हो, न पहाड़ों की

ऊँचाई को पहुँच सकते हो। —17 : 34-37

हे ईमानवालो, अपने दान को एहसान जताकर और दुख देकर उस व्यक्ति की तरह मिट्टी में न मिला दो, जो अपना धन केवल लोगों के दिखाने को ख़र्च करता है, और न अल्लाह को मानता है, और न अंतिम दिन को। उसके ख़र्च की मिसाल ऐसी है, जैसे एक चट्टान थी, जिस पर मिट्टी की तह जमी हुई थी। उस पर जब घोर वर्षा हुई तो सारी मिट्टी बह गई और साफ़ चट्टान ही रह गई। ऐसे लोग अपनी दृष्टि में दान करके जो पुण्य कमाते हैं, उससे कुछ भी उनके हाथ नहीं आता और विधर्मियों को सीधा मार्ग दिखाना अल्लाह का नियम नहीं। —2 : 264

सत्य यह है कि अल्लाह मानवों को बहुत बढ़कर प्रदान करनेवाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते। —2 : 243

आपस के मामलों में उदारता एवं दानशीलता को न भूलो। तुम्हारे कर्मों को अल्लाह देख रहा है। —2 : 237

फूल न जा, अल्लाह फूलनेवालों को पसन्द नहीं करता। —28 : 76

विश्वास रहे अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगे मारनेवाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे। —4 : 36

अपने प्रभु को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके, निस्संदेह वह सीमा को लांघनेवालों को पसंद नहीं करता। धरती में बिगाड़ पैदा न करो जबकि उसका सुधार हो चुका है और अल्लाह ही को पुकारो भय के साथ और लोभ के साथ, निश्चय ही अल्लाह की दयालुता अच्छे चरित्रवाले लोगों के समीप है। —7 : 55-56

अत: तुम्हारा इष्ट-पूज्य एक ही इष्ट पूज्य है और उसी के तुम आज्ञाकारी बनो। और हे नबी, शुभ सूचना दे दो विनम्रता की नीति अपनानेवालों को, जिनका हाल यह है कि अल्लाह की चर्चा सुनते हैं तो उनके हृदय काँप उठते हैं, जो मुसीबत भी उन पर आती है उस पर धैर्य से काम लेते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

—22 : 34-35

अल्लाह न्याय और भलाई और नातेदारों के हक़ अदा करने का आदेश देता है और बुराई और अश्लीलता और अत्याचार और ज़्यादती से रोकता है। वह तुम्हें सदुपदेश देता है, ताकि तुम शिक्षा लो। —16 : 90

इतिहास के पाठ

अब देख लो कि उन ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ। —28 : 40

और कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हम तबाह कर चुके हैं, जिनके लोग अपने जीवन-व्यापार पर इतरा गए थे। सो देख लो, वे उनके निवास-स्थान पड़े हुए हैं जिनमें उनके बाद कम ही कोई बसा है, अन्त में हम ही वारिस होकर रहे।

और तेरा प्रभु बस्तियों को विनष्ट करनेवाला न था जब तक कि उनके केन्द्र में रसूल न भेज देता जो उनको हमारी आयतें सुनाता। और हम बस्तियों को विनष्ट करनेवाले न थे जब तक उनके रहनेवाले ज़ालिम न हो जाते।

तुम लोगों को जो कुछ भी दिया गया है वह केवल सांसारिक जीवन की सामग्री और उसकी शोभा है, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उससे उत्तम और अधिक स्थाई है। क्या तुम लोग बुद्धि से काम नहीं लेते? भला वह व्यक्ति जिससे हमने अच्छा वादा किया हो और वह उसे पानेवाला हो कभी उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसे हमने केवल सांसारिक जीवन की सामग्री दे दी हो और फिर वह पुनरुज्जीवन के दिन दण्ड के लिए सामने लाया जानेवाला हो? —28 : 58-61

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए उन रीतियों को स्पष्ट करे और उन्हीं रीतियों पर तुम्हें चलाए जिनका पालन तुमसे पहले के अच्छे लोग करते थे। वह अपनी दयालुता के साथ तुम्हारी ओर पलटना चाहता है, और वह सब कुछ जानता और गहरी समझ रखता है। —4 : 26

वे कुछ लोग थे जो जा चुके। जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके लिए है और जो कुछ तुम कमाओगे, वह तुम्हारे लिए है। तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे। —2 : 134

इससे पहले इसराईल की संतान को हमने किताब और हुक्म (समझ और निर्णय-शक्ति) और नबूवत (पैग़म्बरी) प्रदान की थी। उनको हमने अच्छी जीवन सामग्री दी, दुनिया भर के लोगों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।

—45 : 16

याद करो जब इबराहीम की उसके प्रभु ने कुछ बातों में परीक्षा ली और वह उन सबमें पूरा उतर गया, तो उसने कहा : "मैं तुझे सब लोगों का पेशवा बनानेवाला हूँ।" इबराहीम ने निवेदन किया : "और क्या मेरी सन्तान से भी यही वादा है?" उसने उत्तर दिया : "मेरा वादा ज़ालिमों के बारे में नहीं है।" —2 : 124

जो अल्लाह चाहे, बिना अल्लाह के कोई शक्ति नहीं ? —18 : 39

धरती के उत्तराधिकारी मेरे नेक बन्दे होंगे। —21 : 105

मूसा ने अपनी जातिवालों से कहा, "अल्लाह से सहायता माँगो और धैर्य से काम लो। धरती अल्लाह की है, अपने बंदों में से जिसको चाहता है उसका वारिस बना देता है और अन्तिम सफलता उन्हीं के लिए है जो उससे डरते हुए काम करें।" उसकी जाति के लोगों ने कहा, "तेरे आने से पहले भी हम सताए जाते थे और अब तेरे आने पर भी सताए जा रहे हैं।" उसने उत्तर दिया, "निकट है वह समय कि तुम्हारा प्रभु तुम्हारे शत्रुओं को नष्ट कर दे और तुमको धरती में अधिकारी बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो।"

—7 : 128-129

विविध

कहो कि यदि समुद्र मेरे प्रभु की बातें लिखने के लिए रोशनाई बन जाए तो वह समाप्त हो जाए, किन्तु मेरे प्रभु की बातें समाप्त न हों, बल्कि यदि उतनी ही रोशनाई हम और ले आएँ तो वह भी काफ़ी न हो सके। —18 : 109

वही ईश है, जिसने यह पुस्तक तुम पर अवतरित की है। इस पुस्तक में दो प्रकार की आयतें हैं : एक अटल जो पुस्तक का मूल आधार है और दूसरी उपलक्षित। जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है, वे बिचलाने की चाह में सदैव उपलक्षित ही के पीछे पड़े रहते हैं और उनको अर्थ पहनाने का प्रयास किया करते हैं, जबकि उनका वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। इसके विपरीत जो लोग ज्ञान में पक्के हैं, वे कहते हैं कि "हमारा इन पर ईमान है, ये सब प्रभु ही की ओर से हैं।" और सत्य यह है कि किसी चीज़ से ठीक शिक्षा केवल बुद्धिमान लोग ही प्राप्त करते हैं। —3 : 7

ये लोग तुम से रूह के विषय में पूछते हैं। कहो, "यह रूह मेरे प्रभु के आदेश से आती है, किन्तु तुम लोगों ने ज्ञान का थोड़ा ही भाग पाया है।"

—17 : 85

हमने इस अमानत को आकाशों और धरती और पर्वतों के सामने प्रस्तुत किया तो वे उसे उठाने के लिए तैयार न हुए और उससे डर गए, किन्तु मनुष्य ने उसे उठा लिया, निस्संदेह वह बड़ ज़ालिम और जाहिल है। —33 : 72

और देखो किसी चीज़ के विषय में कभी यह न कहा करो कि मैं कल यह काम कर दूँगा। (तुम कुछ नहीं कर सकते) सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। यदि भूले से ऐसी बात मुख से निकल जाए तो तुरन्त अपने प्रभु को याद करो और कहो, "आशा है मेरा प्रभु इस मामले में सुपथ से निकटतम बात की ओर मेरा मार्गदर्शन करेगा।" —18 : 23-24

हमने स्पष्ट रूप से सत्य को बतानेवाली आयतें उतार दी हैं, आगे सीधे मार्ग की ओर पथ-प्रदर्शन अल्लाह ही जिसे चाहता है प्रदान करता है।

ये लोग कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया। —24 : 46-47

और जुन्नून (पर भी हमारी कृपा हुई,) याद करो जब वह क्रुद्ध होकर चला गया और समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधियारियों में पुकारा, "नहीं है कोई ईश किन्तु तू, पाक है तेरी हस्ती, निस्संदेह मैं दोषी हूँ।" —21 : 87

हे पालनकर्त्ता, मैं कभी तुझसे प्रार्थना करके असफल नहीं रहा। —19 : 4

तू सबसे बढ़कर दयावान है। —21 : 83

निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है उन लोगों की ओर से जो ईमान लाए हैं। निश्चय ही अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न को पसन्द नहीं करता। —22 : 38

प्रातःकाल और संध्या समय तसबीह करो। —19 : 11

आत्म-शुद्धि

हमने मनुष्य को अत्यन्त उत्तम संरचना के अनुसार पैदा किया, फिर उसे उलटा फेर कर हमने सब नीचों से नीच कर दिया, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे कि उनके लिए कभी समाप्त न होनेवाला बदला है। —95 : 4-6

अत: तुम नसीहत करो यदि नसीहत लाभदायक हो। जो व्यक्ति डरता है, वह नसीहत क़बूल कर लेगा और जो उससे भागेगा वह अत्यन्त दुर्भाग्यवाला होगा, वह बड़ी आग में जाएगा, फिर न उसमें मरेगा न जिएगा।

सफल हो गया वह जिसने पवित्रता अपनाई और अपने प्रभु का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी, किन्तु तुम लोग सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो, हालाँकि परलोक अधिक अच्छा और बाक़ी रहनेवाला है। यही बात पहले आए हुए लेख्यों में भी कही गई थी, इबराहीम और मूसा के लेख्यों में।

—87 : 9-19

और मानवीय आत्मा की और उस सत्ता की सौगन्ध जिसने उसे ठीक-ठाक किया, फिर उसकी बुराई और परहेज़गारी की उसे प्रेरणा दे दी, निश्चय ही सफलता पा गया वह जिसने आत्मा को विशुद्ध एवं विकसित किया और असफल हुआ वह जिसने उसको दबा दिया। —91 : 7-10

कदापि नहीं, तथ्य यह है कि तुम लोग शीघ्र प्राप्त होनेवाली चीज़ (अर्थात् दुनिया) से प्रेम रखते हो और परलोक को छोड़ देते हो। —75 : 20-21

किन्तु उसने न सत्य माना और न नमाज़ पढ़ी, बल्कि झुठलाया और पलट गया। —75 : 31-32

फिटकार हो मनुष्य पर, सत्य का कैसा इनकार करनेवाला है यह।

—80 : 17

कदापि नहीं, इसने वह कर्त्तव्य नहीं निभाया जिसका अल्लाह ने इसे आदेश दिया था। —80 : 23

हमने उसे मार्ग दिखा दिया, चाहे कृतज्ञता दिखानेवाला बने या इनकार करनेवाला। —76 : 3

अल्लाह की दयालुता से निराश न हो, उसकी दयालुता से तो बस अधर्मी ही निराश हुआ करते हैं। —12 : 87

(हे नबी !) कह दो कि हे मेरे बन्दो, जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है। अल्लाह की दयालुता से निराश न हो जाओ, निश्चय ही अल्लाह सारे गुनाह क्षमा कर देता है, वह तो अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। पलट आओ अपने प्रभु की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ इसके पहले कि तुम पर यातना आ जाए और फिर कहीं से तुम्हें सहायता न मिल सके। —39 : 53-54

हे नबी, मेरे बन्दों को सूचित कर दो कि मैं बहुत क्षमाशील और दयावान हूँ। किन्तु इसके साथ मेरी यातना भी अत्यन्त दुखदायनी यातना है।

—15 : 49-50

हाँ, यह जान लो कि अल्लाह पर तौबा क़बूल करने का हक़ उन्हीं लोगों के लिए है जो नादानी के कारण कोई बुरा कर्म कर जाते हैं और उसके बाद शीघ्र ही तौबा कर लेते हैं। ऐसे लोगों की ओर अल्लाह अपनी कृपा-दृष्टि से पुनः लौटता है और अल्लाह सारी बातों का ख़बर रखनेवाला और गहरी समझ रखनेवाला सर्वज्ञ है। किन्तु तौबा उन लोगों के लिए नहीं है जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है उस समय वह कहता है कि अब मैंने तौबा की। और इसी प्रकार तौबा उनके लिए भी नहीं है जो मरते दम तक अधर्मी रहे। ऐसे लोगों के लिए तो हमने दुखदायिनी दण्ड तैयार कर रखा है। —4 : 17-18

कहो, हर चीज़ का स्रष्टा केवल अल्लाह है और वह यकता है उसे सब पर प्रभुत्व प्राप्त है। —13 : 16

वह तो अल्लाह ही है जिसको धरती और आकाश की प्रत्येक चीज़ स्वेच्छा के साथ और विवशतापूर्वक सजदा कर रही है और सब चीज़ों की परछाइयाँ भी प्रातःकाल और संध्या समय उसके आगे झुकती हैं। —13 : 15

जिन लोगों ने अपने प्रभु का आमंत्रण स्वीकार कर लिया उनके लिए भलाई है। —13 : 18

वे जिन्होंने (इस नबी के बुलावे को) मान लिया और उनके दिलों को अल्लाह की याद से परितोष प्राप्त होता है। सावधान रहो ! अल्लाह की याद ही वह चीज़ है जिससे दिलों को परितोष प्राप्त हुआ करता है। फिर जिन लोगों ने सत्य के आमंत्रण को माना और अच्छे कार्य किए वे सौभाग्य- शाली हैं और उनके लिए अच्छा परिणाम है। —13 : 28-29

कहो कि वही मेरा प्रभु है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर मुझे पलट कर जाना है। —13 : 30

कहो, मेरी नमाज़ मेरा समस्त भक्ति सम्बन्धी कृत्य, मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह, सारे संसार के प्रभु, के लिए है। —6 : 162

और जब ये ऐसा करते हैं तो हम इन्हें अपनी ओर से बहुत बड़ा बदला देते और इन्हें सीधा रास्ता दिखा देते। जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे वे उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह की कृपा-दृष्टि रही है अर्थात् नबी, सच्चे लोग और साक्षी और अच्छे लोग। कैसे अच्छे हैं ये साथी जो किसी को प्राप्त हों, यह वास्तविक उदार अनुग्रह है, जो अल्लाह की ओर से होता है और यथार्थ जानने के लिए अल्लाह ही का ज्ञान काफ़ी है।

—4 : 67-70

उस व्यक्ति से अच्छी और किसकी जीवन-प्रणाली हो सकती है जिसने अल्लाह के आगे सिर झुका दिया और अच्छी से अच्छी नीति अपनाई और एकचित्त होकर इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण किया, उस इबराहीम के तरीक़े का जिसे अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया था। आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह का है और अल्लाह हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है।

—4 : 126

कहो, मैं पनाह माँगता हूँ, प्रातःकाल के प्रभु की हर उस चीज़ की बुराई से जिसे उसने पैदा किया है, और रात के अंधकार की बुराई से जबकि वह छा जाए। और गाँठों में फूँकनेवाले (या वालियों) की बुराई से और ईर्ष्या करनेवाले की बुराई से, जबकि वह ईर्ष्या करे। —113 : 1-5

कहो, मैं पनाह माँगता हूँ, लोगों के पालनकर्त्ता प्रभु, लोगों के सम्राट की, लोगों के वास्तविक पूज्य की उस वसवास डालनेवाले की बुराई से जो बार-बार पलटकर आता है, जो लोगों के दिलों में वसवास डालता है, चाहे वह जिन्नों में से हो या मनुष्यों में से। —114 : 1-6

तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश आ गया है और एक ऐसा सत्य दर्शानेवाला ग्रन्थ जिसके द्वारा अल्लाह उन लोगों को जो उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं, सलामती की राहें बताता है और अपनी अनुमति से उनको अंधेरों से निकालकर उजाले की ओर लाता है और सीधे मार्ग की दिशा में उनका पथ-प्रदर्शन करता है। —5 : 15-16

हे लोगो जो ईमान लाए हो, (अल्लाह के आगे) झुको और सजदा करो, और अपने प्रभु की बंदगी करो, और अच्छा कर्म करो, इसी से आशा की जा सकती है कि तुमको सफलता प्राप्त हो। —22 : 77